नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 377, नई दिल्ली, मंगलवार 17 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी।

● 03 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा(भारतीय नववर्ष) : नव-आशा, नव-ऊर्जा और नव-संस्कृति का संदेश ● 06 स्वच्छ पर्यावरण को व्यापक वृक्षारोपण की आवश्यकता है ● 08 कोल्हान रक्षा संघ ने पांचवीं अनुसूची एवं कम मजदूरी पर पर उद्योग...

मुख्य संपादक ने दिया तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह का निमंत्रण

जस्टिस टंडन और अदिश सी. अग्गरवाला से सकारात्मक प्रतिक्रिया

संजय कुमार बाठला

परिवहन विशेष समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह की तैयारियां जोरों पर हैं। आज मुख्य संपादक संजय कुमार बाठला, सह-संपादक पिंकी कुंडू तथा संवाददाता सुनीता शर्मा ने दिल्ली उच्च न्यायालय की संगीता मल्होत्रा तलवार, सीनियर पैनल काउंसल, केंद्र सरकार के नेतृत्व में उत्तराखंड उच्च न्यायालय के पूर्व जस्टिस राजेश टंडन एवं अध्यक्ष इंटरनेशनल ज्यूरिस्ट आफ लंदन एवं पूर्व अध्यक्ष, उच्चतम न्यायालय बार एसोसिएशन श्री अदिश सी. अग्गरवाला से सौजन्य भेंट की।

इस अवसर पर मुख्य संपादक ने समारोह के उद्देश्यों, कार्यक्रम तथा परिवहन क्षेत्र के योगदान पर चर्चा की।

निमंत्रण सौंपाः जस्टिस राजेश टंडन एवं अदिश सी. अग्गरवाला को औपचारिक निमंत्रण पत्र भेंट किया गया।

स्वीकृति प्राप्तः दोनों अतिथियों ने निमंत्रण स्वीकार कर समारोह में भाग लेने की सहमति प्रदान की।

परिवहन नीति पर विचार-विमर्शः भेंट में परिवहन क्षेत्र की चुनौतियों, कानूनी ढांचे एवं नीतिगत सुधारों पर सकारात्मक चर्चा हुई।

दिल्ली पुलिस आयुक्त से कल भेंट मुख्य संपादक संजय कुमार बाठला मंगलवार को दिल्ली पुलिस मुख्यालय में आयुक्त दिल्ली पुलिस से भेंट कर समारोह का निमंत्रण सौंपेंगे। यह कदम परिवहन सुरक्षा एवं कानून प्रवर्तन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

परिवहन विशेष का यह तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह परिवहन क्षेत्र के उत्कृष्ट योगदान को सम्मानित करने का प्रमुख मंच सिद्ध होगा।

परिवहन विशेष मुख्य संपादक, सह संपादक, संवाददाता सुनीता और अधिवक्ता संगीता मल्होत्रा तलवार, सीनियर पैनल काउंसल, केंद्र सरकार ने जस्टिस राजेश टंडन और डा. अदिश सी अग्गरवाला से की मुलाकात

जस्टिस टंडन और अदिश सी. अग्गरवाला को तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह का निमंत्रण

परिवहन विशेष समाचार पत्र के आने वाले तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह के प्रति आज परिवहन विशेष के मुख्य संपादक संजय कुमार बाठला, सह संपादक पिंकी कुंडू, संवाददाता सुनीता शर्मा ने दिल्ली उच्च न्यायालय की अधिवक्ता संगीता मल्होत्रा तलवार, सीनियर पैनल काउंसल, केंद्र सरकारके नेतृत्व में उत्तराखंड उच्च न्यायालय के पूर्व जस्टिस राजेश टंडन एवं अध्यक्ष इंटरनेशनल ज्यूरिस्ट आफ लंदन एवं पूर्व अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन श्री अदिश सी. अग्गरवाला से भेटवार्ता की।

इस भेटवार्ता में मुख्य संपादक द्वारा तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की गई। साथ ही जस्टिस राजेश टंडन एवं अदिश सी. अग्गरवाला को सम्मान समारोह में सम्मिलित होने का औपचारिक निमंत्रण पत्र सौंपा गया।सम्मान समारोह में भागीदारी की स्वीकृति

जस्टिस राजेश टंडन एवं अदिश सी. अग्गरवाला ने मुख्य संपादक द्वारा प्राप्त निमंत्रण को स्वीकार करते हुए समारोह में सम्मिलित होने की पूर्ण स्वीकृति प्रदान की। यह स्वीकृति परिवहन क्षेत्र के नीतिगत एवं विधिक योगदान को सम्मानित करने के उद्देश्य को और सशक्त बनाएगी।

मंगलवार को दिल्ली पुलिस आयुक्त से भेंट इसी क्रम में मंगलवार को परिवहन विशेष के मुख्य संपादक दिल्ली पुलिस हेडक्वार्टर में आयुक्त दिल्ली पुलिस से भेंट कर निमंत्रण प्रदान करने जाएंगे। यह भेंट परिवहन सुरक्षा, यातायात प्रबंधन एवं कानून प्रवर्तन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करेगी।

मुख्य बिंदुः

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह के लिए जस्टिस राजेश टंडन एवं अदिश सी. अग्गरवाला की सहमति।

परिवहन नीति, विधि एवं सुरक्षा पर सकारात्मक चर्चा।

दिल्ली पुलिस आयुक्त को निमंत्रण के लिए कल भेंट निर्धारित।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

Be the Police और Cyber Safe ऐसी दो पहल हैं जो प्रत्येक नागरिक को पुलिस अधिकारी और साइबर योद्धा की तरह कार्य करने के लिए सक्षम बनाती हैं।

आज हम चर्चा करेंगे कि कोई नागरिक धोखाधड़ी वाले कॉल, संदेश या ईमेल को पुलिस की तरह कैसे रिपोर्ट कर सकता है, और यदि किसी को लगता है कि उसका नंबर या ईमेल गलती से ब्लॉक हो गया है तो उसे कैसे पुनः सक्रिय किया जा सकता है।

इसमें एक महत्वपूर्ण साधन है Suspect Repository, जो राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर उपलब्ध है। इसका उद्देश्य नागरिकों को संदिग्ध मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, सोशल मीडिया अकाउंट और वेबसाइट लिंक साझा करने और जाँचने की सुविधा देना है।

Suspect Repository उपयोग की प्रक्रिया

1 पोर्टल पर जाएँ

* आधिकारिक वेबसाइट खोलें: https://cybercrime.gov.in
* होमपेज पर "Suspect Repository" विकल्प चुनें।

2 संदिग्ध जानकारी दर्ज करें

* यहाँ आप किसी भी संदिग्ध मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, सोशल मीडिया अकाउंट या वेबसाइट लिंक दर्ज कर सकते हैं।
* यदि आपको कोई धोखाधड़ी वाला संदेश, कॉल या ईमेल मिला है, तो उसकी जानकारी यहाँ डालें।

3 विवरण जोड़ें

* संदिग्ध गतिविधि का संक्षिप्त विवरण लिखें (जैसे Loan Fraud SMS, Phishing Email, Fake Job Offer)।
* यदि संभव हो तो स्क्रीनशॉट या दस्तावेज़ अपलोड करें।

4 सबमिट करें

* जानकारी भरने के बाद Submit पर क्लिक करें।
* यह डेटा राष्ट्रीय स्तर पर रिपॉज़िटरी में जुड़ जाता है।

5 रिपॉज़िटरी में खोजें

* नागरिक और अधिकारी दोनों इस रिपॉज़िटरी में जाकर किसी भी नंबर/ईमेल/लिंक को खोज सकते हैं।
* यदि वह पहले से रिपोर्ट हुआ है, तो उसकी जानकारी दिखाई देगी।
* इससे आप जान सकते हैं कि कोई नंबर या ईमेल पहले से संदिग्ध घोषित किया गया है या नहीं।

6 नागरिकों के लिए लाभ

* सतर्कताः किसी भी संदिग्ध नंबर/ईमेल को तुरंत जाँच सकते हैं।
* साझा जानकारीः पूरे देश के नागरिकों द्वारा रिपोर्ट किए गए संदिग्ध डेटा का लाभ मिलता है।
* रोकथामः धोखाधड़ी से बचने के लिए पहले से चेतावनी मिल जाती है।

Suspect Repository एक सामूहिक सुरक्षा तंत्र है, जहाँ नागरिक और अधिकारी मिलकर संदिग्ध डिजिटल पहचान को चिन्हित करते हैं। इससे धोखाधड़ी रोकने और जागरूकता बढ़ाने में मदद मिलती है।

यदि किसी को लगता है कि उसका नंबर या ईमेल गलती से ब्लॉक हो गया है, तो वह नीचे दिए गए अपील और ग्रिवेन्स मैकेनिज़्म का प्रयोग कर सकता है।

अपील और ग्रिवेन्स मैकेनिज़्म

यदि कोई व्यक्ति किसी मध्यस्थ (Intermediary) के Grievance Officer के निर्णय से असंतुष्ट है, तो वह Grievance Appellate Committee (GAC) के समक्ष 30 दिनों के भीतर अपील कर सकता है।

* शिकायत केवल तभी दर्ज करें जब संबंधित मध्यस्थ के Grievance Officer (GO) से संपर्क किया गया हो।
* अपील GO के निर्णय प्राप्त होने के 30 दिनों के भीतर करनी होगी, या यदि GO/मध्यस्थ से 30 दिनों में कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ हो।

GAC उन अपीलों से संबंधित है जो उपयोगकर्ताओं (Digital Nagriks) द्वारा सोशल मीडिया मध्यस्थों और अन्य मध्यस्थों के Grievance Officers के निर्णयों के विरुद्ध की जाती हैं। ये अपील नियमों के उल्लंघन या मध्यस्थ द्वारा उपलब्ध कराए गए कंप्यूटर संसाधनों से संबंधित मामलों पर आधारित होती हैं।

GAC की विशेषताएँ

* एक ऑनलाइन विवाद निवारण तंत्र।
* पूरी अपील प्रक्रिया—फाइलिंग से लेकर निर्णय तक—डिजिटल मोड में होती है।
* सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 [IT Rules, 2021] के अंतर्गत कार्य करती है।
* भारतीय उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षित, विश्वसनीय और जवाबदेह इंटरनेट सुनिश्चित करती है।
* सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स (Facebook, Instagram, WhatsApp, Twitter, LinkedIn आदि) से संबंधित अपीलों का निवारण करती है।

ध्यान दें

* वित्तीय धोखाधड़ी या साइबर अपराध से संबंधित मामलों की रिपोर्ट साइबरक्राइम हेल्पलाइन नंबर "1930" पर करें या वेबसाइट https://www.cybercrime.gov.in पर जाएँ।
* अपील दर्ज करने से पहले सहायता हेतु GAC वेबसाइट पर उपलब्ध FAQ (https://gac.gov.in/CMSData/FAQs) देखें।
* GAC वित्तीय धोखाधड़ी या साइबर अपराध मामलों का निवारण नहीं करती।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

20 सड़क सुरक्षा
महिला सुरक्षा
प्रदूषण
साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9
मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (National Vaccination Day)

हमारे आसपास मौजूद वायरस और बैक्टीरिया अक्सर हमें अपनी चपेट में लेकर बीमार कर देते हैं। ऐसे में वैक्सीनेशन की मदद से इन संक्रामक बीमारियों से हम सुरक्षित रह पाते हैं। वैक्सीन वायरस या बैक्टीरिया के खिलाफ हमारी रक्षा करते हुए हमें कई गंभीर बीमारियों से बचाती है। ऐसे में यह बेहद जरूरी है कि हम सब अपने लिए जरूरी वैक्सीन जरूर लगवाएं। इसलिए लोगों को वैक्सीनेशन का महत्व बताने के मकसद से हर साल 16 मार्च को नेशनल वैक्सीनेशन डे मनाया जाता है।

>> राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस का इतिहास <<

देश में हर साल 16 मार्च को राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने की शुरुआत साल 1995 में हुई थी। उस साल इसी दिन यानी 16 मार्च को भारत में मुंह के जरिए पोलियो वैक्सीन की पहली खुराक दी गई थी। साथ ही इस दिन भारत को पोलियो मुक्त बनाने के मकसद से सरकार ने 'पल्स पोलियो' अभियान की शुरुआत की थी। इस अभियान के तहत 0 से 5 साल की उम्र के सभी बच्चों को पोलियो की 2 बूंद दी गई थीं और इस अभियान के तहत साल 2014 में, भारत को पोलियो मुक्त देश घोषित किया गया था।

>> राष्ट्रीय वैक्सीनेशन दिवस का महत्व <<

इस दिन की शुरुआत भले ही बच्चों की वैक्सीन के साथ हुई हो, लेकिन इसका महत्व सभी के लिए है। दरअसल, टीका सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि बड़े, बूढ़ों के लिए भी जरूरी होता है। ऐसे में लोगों को इसका महत्व समझाने से मकसद से इस दिन को मनाया जाता है। वैक्सीन कई खतरनाक और गंभीर बीमारियों को रोकने का एक प्रभावी माध्यम है। वैक्सीन के महत्व का सबसे बड़ा उदाहरण हाल ही में कोरोना वैक्सीनेशन के दौरान देखने को मिला। WHO के मुताबिक, हर साल टीकाकरण की मदद करीब 2-3 मिलियन लोगों की जान बचाई जाती हैं।

>> रोग की रोकथाम <<

टीके व्यक्तियों को संक्रामक रोगों से बचाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, ताकि प्रतिरक्षा प्रणाली को विशिष्ट रोगजनकों को पहचानने और उनसे लड़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। खसरा, कण्ठमाला, रूबेला, पोलियो और काली खांसी जैसी बीमारियाँ, जो कभी व्यापक थीं और महत्वपूर्ण रुग्णता और मृत्यु दर का कारण बनती थीं, टीकाकरण कार्यक्रमों के कारण दुनिया के कई हिस्सों में काफी हद तक नियंत्रित या समाप्त हो गई हैं। अपने बच्चे को टीका लगाकर, आप न केवल उनकी रक्षा करते हैं बल्कि समाज से इन बीमारियों को मिटाने के सामूहिक प्रयास में भी योगदान देते हैं।

>> वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा <<

एक दूसरे से जुड़ी दुनिया में जहाँ लोग और सामान आसानी से सीमाओं के पार जाते हैं, संक्रामक रोग एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तेज़ी से फैल सकते हैं। टीकाकरण वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह बीमारियों के अंतरराष्ट्रीय प्रसार को रोकता है और महामारी के जोखिम को कम करता है। अपने बच्चे को टीका लगवाकर, आप संक्रामक रोगों को नियंत्रित करने और उन्मूलन करने के वैश्विक प्रयासों में योगदान देते हैं, जिससे दुनिया सभी के लिए सुरक्षित जगह बन जाती है।

विश्व खसरा दिवस या, खसरा प्रतिरक्षण दिवस

खसरे की रोकथाम के लिए हर साल 16 मार्च के दिन विश्व खसरा दिवस या खसरा प्रतिरक्षण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य बच्चों में इस बीमारी को फैलने से रोकना है। खसरे की बीमारी छोटे बच्चों की मृत्यु और विकलांगता के प्रमुख कारणों में से एक है। मेडिकल जानकारों के मुताबिक, खसरे के लिए कोई विशेष इलाज अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाया है। ऐसे में बचपन में ही इससे बचाव के लिए बच्चों को वैक्सीन दी जाती है। जिन बच्चों को खसरा प्रतिरक्षण की वैक्सीन या टीका नहीं लगता, उनमें इस रोग से पीड़ति होने का खतरा बढ़ जाता है। अगर ऐसा हो जाए तो बीमारी में बच्चों को गंभीर समस्या से जूझना पड़ सकता है। कई मामलों में बच्चों की मौत तक हो जाती है। इस कारण लोगों को जागरूक करने के लिए खसरा प्रतिरक्षण दिवस मनाया जाता है।

>> क्या है खसरे की बीमारी ? <<

खसरा बचपन में संक्रमण से होने वाला रोग है, जो संक्रमित बलगम और लार के संपर्क के कारण फैलता है। खसरे का वायरस कई घंटों के लिए सतह पर रह सकता है। वहीं, संक्रमित कणों के हवा में फैलने के चलते निकटता वाले व्यक्ति संक्रमित हो सकते हैं। खसरा वायरस वैक्सीन (टीका) से इसे रोकने के प्रयास आज भी जारी हैं।

>> कैसे और कब दी जाती है वैक्सीन <<

बच्चों को इसकी पहली खुराक पैदा होने के नौ से 12 महीनों के दौरान दी जाती है। दूसरी खुराक 16 से 24 महीने के बीच दी जाती है। भारत सरकार के नेशनल हेल्थ पोर्टल के मुताबिक, साल 2017 में विश्व के 85 प्रतिशत बच्चों को नियमित स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से उनके पहले जन्मदिन पर खसरे की पहली खुराक दी गई। वहीं, 67 प्रतिशत बच्चों को खसरा प्रतिरक्षण की दूसरी खुराक दी गई।

>> चौंकानें वाले हैं आंकड़ें <<

साल 2018 में दुनियाभर में खसरे के करीब एक करोड़ मामले सामने आए। इनमें से एक लाख 42,000 मरीजों की मौत हो गई थी। उल्लेखनीय है कि यह आंकड़े डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ की ओर से जारी किए गए उन आंकड़ों से कहीं ज्यादा थे, जो उन्हें अलग-अलग देशों से प्राप्त हुए थे। उनके आधार पर डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ ने बताया था कि 2018 में पूरी दुनिया में खसरे के केवल तीन लाख 53 हजार मामले सामने आए थे, जबकि अन्य रिपोर्टों में हालात कहीं ज्यादा खराब थे।

>> भारत में कितना गंभीर है खसरा ? <<

स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी एक पत्रिका के मुताबिक, भारत उन देशों की सूची में दूसरे नंबर पर है, जहां खसरे का प्रकोप विश्व में सबसे अधिक है। आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश में 23 लाख बच्चे ऐसे हैं जिन्हें खसरे का टीका ही नहीं मिलता है। वहीं, 24 लाख बच्चों की संख्या के साथ अफ्रीकी देश नाइजीरिया इस लिस्ट में पहले पायदान पर है। रिपोर्टों के मुताबिक, साल 2018 में भारत में खसरे के लगभग 70,000 मामले थे, जो दुनिया में इस बीमारी से जुड़े मामलों की तीसरी सबसे बड़ी संख्या थी।

>> खसरा रोग में आनी वाली समस्याएं <<

एनएचपी के अनुसार, आमतौर पर खसरे का पहला लक्षण तेज बुखार होता है। मेडिकल क्षेत्र से जुड़े लोग बताते हैं कि वायरस के संपर्क में आने के बाद 10 से 12 दिनों में मरीज में खांसी, सर्दी, आंखों का लाल होना आदि समस्याएं आती हैं। वहीं, खसरे से जुड़ी गंभीर समस्याओं में अंधापन, इन्सेफलाइटिस (मस्तिष्क में सूजन), गंभीर डायरिया, निमोनिया आदि आती हैं, जिनसे पीड़ित की मृत्यु तक हो सकती है। कम पोषण, विटामिन ए की कमी और एचआईवी/एड्स की स्थिति में खसरे की गंभीरता अधिक बढ़ जाती है।

पिछले कुछ सप्ताहों के दौरान भारत के विभिन्न भागों में HPV-संबंधित कैंसर, किडनी फेल्योर, लिवर सिरोसिस, ओरल कैंसर और गैस्ट्रिक कैंसर जैसे गंभीर रोगों पर अनेक स्वास्थ्य सेमिनार, वैज्ञानिक चर्चाएँ और जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

ये पहल सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की बढ़ती चिंता को दर्शाती हैं कि भारत में जीवनशैली से जुड़ी गंभीर बीमारियाँ लगातार बढ़ रही हैं और अब इनका प्रभाव किशोरों तथा युवाओं पर भी तेजी से दिखाई देने लगा है।

नीचे इस विषय का विस्तृत विवरण और हाल के वैज्ञानिक अवलोकन प्रस्तुत हैं।

भारत में बढ़ता स्वास्थ्य संकट

युवाओं में बढ़ती गंभीर चिंता

1. भारत में रोगों के स्वरूप में परिवर्तन

कई दशकों तक भारत में संक्रामक रोग जैसे तपेदिक (टीबी), मलेरिया और दस्त-डायरिया जैसी बीमारियाँ प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएँ थीं।

किन्तु हाल के वर्षों में भारत उस स्थिति में प्रवेश कर चुका है जिसे महामारी-विज्ञान (Epidemiology) की भाषा में "एपिडेमियोलॉजिकल ट्रांजिशन" कहा जाता है।

इसका अर्थ है कि अब गैर-संक्रामक रोग (Non-Communicable Diseases – NCDs) जैसे कैंसर, किडनी रोग, लिवर विकार, मधुमेह और हृदय रोग तेजी से बढ़ रहे हैं।

सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि जो बीमारियाँ पहले मुख्यतः वृद्ध लोगों में देखी जाती थीं, वे अब किशोरों और युवाओं में भी तेजी से दिखाई देने लगी हैं।

उदाहरण के रूप में :

एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण (Comprehensive National Nutrition Survey) के अनुसार भारत में लगभग 4.9% बच्चों और किशोरों में किडनी की कार्यक्षमता में कमी देखी गई है।

चिकित्सकों के अनुसार 40 वर्ष से कम आयु के लोगों में क्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ (CKD) के मामले बढ़ रहे हैं और अधिकतर मामलों का पता तब चलता है जब रोग काफी बढ़ चुका होता है।

फैटी लिवर, हेपेटाइटिस और लिवर सिरोसिस जैसी समस्याएँ अब 18 से 35 वर्ष के युवाओं में तेजी से बढ़ रही हैं।

ये सभी संकेत इस बात की ओर इशारा करते हैं कि गंभीर रोग अब पहले की तुलना में बहुत कम आयु में शुरू हो रहे हैं।

2. किडनी रोगों में तेज़ वृद्धि

भारत में किडनी रोग अब एक बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बनते जा रहे हैं।

वर्तमान स्थिति

क्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ (CKD) अब युवाओं और यहाँ तक कि किशोरों में भी पाई जा रही है।

भारत के कुछ क्षेत्रों को "किडनी रोग हॉटस्पॉट" माना जाने लगा है, जहाँ बड़ी संख्या में लोगों में किडनी क्षति पाई जा रही है।

मुख्य जोखिम कारक

मधुमेह (डायबिटीज) और उच्च रक्तचाप

दर्दनिवारक दवाओं और एंटासिड का अत्यधिक उपयोग

कुछ क्षेत्रों में खराब या दूषित पानी

जिम में अत्यधिक प्रोटीन सप्लीमेंट का दुरुपयोग

अधिक नमक और प्रोसेस्ड फूड का सेवन

कोल्ड ड्रिंक्स का अत्यधिक सेवन

यदि किडनी को होने वाला नुकसान लंबे समय तक अनदेखा रह जाए, तो अंततः यह एंड-स्टेज रीनल डिज़ीज़ में बदल सकता है, जिसमें डायलिसिस या किडनी प्रत्यारोपण की आवश्यकता पड़ती है।

3. युवाओं में लिवर रोग और सिरोसिस का बढ़ता खतरा

भारत में युवाओं के बीच लिवर रोग तेजी से बढ़ रहे हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार 20 से 35 वर्ष की आयु के लोगों में लिवर सिरोसिस और लिवर फेल्योर के मामले सामने आ रहे हैं, जो पहले अपेक्षाकृत दुर्लभ थे।

मुख्य कारण

शराब का सेवन

मोटापा और निष्क्रिय जीवनशैली

नॉन-अल्कोहॉलिक फैटी लिवर रोग (MASLD)

हेपेटाइटिस संक्रमण

जंक फूड और शर्करा युक्त पेय पदार्थों का अत्यधिक सेवन

और भी चिंताजनक तथ्य यह है कि मोटापे और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों के कारण बच्चों में भी फैटी लिवर रोग बढ़ रहा है।

यदि समय पर उपचार न किया जाए तो यह रोग निम्न चरणों में आगे बढ़ सकता है :

फैटी लिवर →

सूजन →

फाइब्रोसिस →

सिरोसिस →

लिवर कैंसर

4. भारत में कैंसर का बढ़ता बोझ

भारत में कैंसर के मामलों में निरंतर वृद्धि हो रही है।

हाल के आँकड़ों के अनुसार भारत में हर वर्ष लगभग 15 लाख से अधिक नए कैंसर रोगियों का निदान होता है, और यह संख्या लगातार बढ़ रही है।

विशेष रूप से चिंताजनक प्रवृत्तियाँ :

1. HPV-संबंधित कैंसर

मानव पैपिलोमा वायरस (HPV) संक्रमण से जुड़े कैंसरः

सर्वाइकल कैंसर

एनल कैंसर

ओरोफैरिन्जियल कैंसर

इनसे बचाव के लिए HPV वैक्सीन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

2. ओरल कैंसर

भारत में ओरल कैंसर की दर विश्व में सबसे अधिक है, जिसका मुख्य कारण हैः

तंबाकू चबाना

गुटखा

पान मसाला

धूम्रपान

शराब

कोल्ड ड्रिंक्स का अत्यधिक सेवन

3. गैस्ट्रिक और कोलोरेक्टल कैंसर

इनका संबंध बढ़ते रूप में निम्न कारणों से देखा जा रहा हैः

प्रोसेस्ड फूड

कोल्ड ड्रिंक्स

Helicobacter pylori संक्रमण

मोटापा

निष्क्रिय जीवनशैली

4. युवाओं में किडनी कैंसर

अध्ययनों के अनुसार 50 वर्ष से कम आयु के लोगों में किडनी कैंसर के मामलों में पिछले दशक में लगभग 20–30% वृद्धि देखी गई है।

5. ये बीमारियाँ क्यों बढ़ रही हैं

सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार इन रोगों की वृद्धि का मुख्य कारण आधुनिक जीवनशैली में तेजी से आया परिवर्तन है।

मुख्य कारण :

1. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ

अधिक मात्रा में सेवनः

मीठे पेय पदार्थ

परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट

प्रोसेस्ड स्नैक्स

ये मोटापा, फैटी लिवर, मधुमेह और कैंसर के जोखिम को बढ़ाते हैं।

2. निष्क्रिय जीवनशैली

लंबे समय तक स्क्रीन का उपयोग

कम शारीरिक गतिविधि

अनियमित नींद

3. पर्यावरणीय और रासायनिक जोखिम

वायु प्रदूषण

दूषित पानी

खाद्य पदार्थों में रासायनिक पदार्थ

4. देर से निदान

किडनी रोग और लिवर फाइब्रोसिस जैसी कई बीमारियाँ लंबे समय तक बिना लक्षण के रहती हैं, इसलिए अक्सर रोग का पता देर से चलता है।

6. रोकथाम और उपचार में नवीन पहल

इन बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए स्वास्थ्य संस्थाएँ और शोधकर्ता कई कदम उठा रहे हैं।

1. राष्ट्रीय स्क्रीनिंग कार्यक्रम

किडनी फंक्शन टेस्ट

लिवर एंजाइम टेस्ट

कैंसर स्क्रीनिंग

2. HPV टीकाकरण अभियान

सर्वाइकल और अन्य HPV-संबंधित कैंसर को रोकने के लिए टीकाकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

3. लाइफस्टाइल मेडिसिन

डॉक्टर अब विशेष रूप से जोर दे रहे हैंः

संतुलित और पौष्टिक आहार

नियमित व्यायाम

वजन नियंत्रण

शराब, कोल्ड ड्रिंक्स और तंबाकू से परहेज

4. आधुनिक चिकित्सा प्रगति

उन्नत डायलिसिस तकनीक

न्यूनतम चीरा (मिनिमली इनवेसिव) कैंसर सर्जरी

टार्गेटेड कैंसर थेरेपी

लिवर और किडनी प्रत्यारोपण

7. जनजागरूकता का महत्व

भारत में आयोजित हो रहे सेमिनार और जनजागरूकता कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

ये कार्यक्रम लोगों कोः

रोगों के शुरुआती लक्षणों के बारे में जागरूक करते हैं

रोकथाम के उपाय बताते हैं

समय पर स्वास्थ्य जाँच के लिए प्रेरित करते हैं

दीर्घकालिक रोगों से जुड़े सामाजिक भय को कम करते हैं

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में यह सिद्ध हो चुका है कि

"रोकथाम और प्रारम्भिक निदान, देर से किए गए उपचार की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी होते हैं।"

✓ निष्कर्ष

भारत आज अपने रोग-स्वरूप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।

किडनी फेल्योर, लिवर सिरोसिस और विभिन्न प्रकार के कैंसर जैसी गंभीर बीमारियाँ अब केवल वृद्ध लोगों तक सीमित नहीं रह गई हैं, बल्कि किशोरों और युवाओं में भी तेजी से बढ़ रही हैं।

इस स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक हैः

स्वस्थ जीवनशैली अपनाना

हानिकारक पदार्थों पर कड़ा नियंत्रण

व्यापक जनजागरूकता

नियमित स्वास्थ्य जाँच

केवल वैज्ञानिक अनुसंधान, निवारक स्वास्थ्य-देखभाल और जागरूक नागरिक व्यवहार के संयुक्त प्रयासों से ही भारत इस उभरते हुए स्वास्थ्य संकट का सफलतापूर्वक सामना कर सकता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (भारतीय नववर्ष) : नव-आशा, नव-ऊर्जा और नव-संस्कृति का संदेश

-सुनील कुमार महला

हमारी सनातन, अद्भुत और सुंदर भारतीय संस्कृति में पर्व केवल उत्सव और उल्लास का अवसर नहीं होते, बल्कि वे जीवन के गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संदेश भी अपने भीतर समेटे रहते हैं। प्रत्येक त्योहार हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने, हमारी परंपराओं, रीति-रिवाजों का सम्मान करने और आत्मिक उन्नति की प्रेरणा देता है। ऐसा ही एक पवित्र और महत्त्वपूर्ण पर्व है नवसंवत्सर (हिंदू नववर्ष), जो चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से आरंभ होता है। इसे वर्ष प्रतिपदा भी कहा जाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यह पर्व अलग-अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पड़वा, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में उगादी या युगादि, कश्मीर में नवरेह, सिंधी समुदाय में चेटीचंड तथा मणिपुर में साजिबू चेइरा ओबा के रूप में इसे उल्लासपूर्वक मनाया जाता है।

वर्ष 2026 (संवत 2083) है 'रौद्र संवत्सर' :- इस साल यानी कि वर्ष 2026 में हिंदू नववर्ष अर्थात विक्रम संवत 2083 की शुरुआत 19 मार्च, गुरुवार से होगी। गौरतलब है कि जिस दिन नववर्ष आरंभ होता है, उस दिन का स्वामी ग्रह पूरे वर्ष का राजा माना जाता है और इस बार नववर्ष गुरुवार को होने के कारण वर्ष का राजा देवगुरु बृहस्पति (गुरु) माने जाएंगे, जबकि मंत्री का पद मंगल ग्रह के पास रहेगा। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार राजा गुरु होने से धार्मिक गतिविधियों और ज्ञान में वृद्धि होगी, वहीं मंत्री मंगल होने के कारण समाज में साहसिक निर्णयों के साथ कुछ उग्रता भी दिखाई दे सकती है। इस वर्ष का संवत्सर 'रौद्र' नाम से जाना जाएगा, जो उग्रता का संकेत देता है। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार रौद्र संवत्सर में वर्षा सामान्य से कम रहने की संभावना रहती है, जिसका प्रभाव कृषि और फसलों पर पड़ सकता है। इसके साथ ही उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और मीन लग्न में वर्षारंभ होने से प्राकृतिक आपदाओं और राजनीतिक उतार-चढ़ाव की स्थितियां भी बन सकती हैं।

शक्ति की उपासना का भी पर्व है नवसंवत्सर:-

यह समय चैत्र नवरात्रि के आगमन का भी होता है, जब शक्ति की उपासना के माध्यम से नई ऊर्जा और आध्यात्मिक बल प्राप्त किया जाता है। ठंड की विदाई और गर्मी की शुरुआत के बीच यह पर्व हमें सात्विक जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देता है।उल्लेखनीय है कि हिंदू नववर्ष अंग्रेजी कैलेंडर से लगभग 57 वर्ष आगे चलता है। जहां वर्तमान में अंग्रेजी कैलेंडर का वर्ष 2026 है, वहीं हिंदू नववर्ष 2083 होगा। जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि शास्त्रों में इसे 'रौद्र संवत्सर' कहा गया है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इसी दिन सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने ब्रह्मांड की रचना प्रारंभ की थी। इसी तिथि पर भगवान विष्णु ने अपने प्रथम अवतार मत्स्य अवतार धारण किया था।

उत्साह, उमंग और नवजीवन का प्रतीक है नवसंवत्सर:-

आज के समय में हम पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में अपनी परंपराओं को धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं और अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार जनवरी से वर्ष की शुरुआत मानते हैं। जबकि भारतीय परंपरा में वर्ष का आरंभ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से माना जाता है। दुर्भाग्यवश आज की युवा पीढ़ी को हिंदू पंचांग और महीनों के नामों तक की जानकारी कम होती जा रही है। उन्हें यह जानना चाहिए कि हिंदू पंचांग के महीनों में चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन प्रमुख हैं। चैत्र मास अंग्रेजी कैलेंडर के मार्च-अप्रैल के बीच आता है। वास्तव में जनवरी का महीना हिंदू पंचांग के अनुसार पौष मास होता है। प्राचीनकाल से ही चैत्र मास को नए कार्यों के आरंभ का समय माना गया है, क्योंकि यह वसंत ऋतु का महीना है। इस समय प्रकृति नवजीवन से भर उठती है। न अधिक ठंड होती है और न ही अधिक गर्मी। इसी कारण पुराने कार्यों का समापन और नए कार्यों की योजना इसी समय बनाई जाती थी। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में बहीखातों का नवीनीकरण और मांगलिक कार्यों की शुरुआत इसी समय होती है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रह, ऋतु, मास, तिथि और पक्ष की गणना भी चैत्र प्रतिपदा से प्रारंभ मानी जाती है। सूर्य की गति के अनुसार मेष राशि की शुरुआत भी इसी समय मानी जाती है। वास्तव में हिंदू कैलेंडर का प्रथम माह चैत्र और अंतिम माह फाल्गुन है, और विशेष बात यह है कि दोनों ही महीनों का संबंध

वसंत ऋतु से है। यह ऋतु उत्साह, उमंग और नवजीवन का प्रतीक है। चैत्र मास के अंतिम दिन पूर्णिमा को चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में स्थित होता है, इसी कारण इस महीने का नाम 'चैत्र' पड़ा। अमावस्या के बाद चंद्रमा मेष राशि और अश्विनी नक्षत्र में प्रकट होकर प्रतिदिन एक-एक कला बढ़ाता हुआ पंद्रहवें दिन चित्रा नक्षत्र में पूर्णता प्राप्त करता है। इसी खगोलीय स्थिति के आधार पर इस मास का नाम चैत्र रखा गया। 'संवत्सर' का अर्थ है ऐसा वर्ष जिसमें बारह महीने होते हैं। विक्रम संवत में महीनों की गणना दो प्रकार से होती है। महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत में अमावस्या के बाद नया महीना शुरू होता है, जबकि उत्तर भारत में पूर्णिमा के अगले दिन से नया महीना माना जाता है। इसी कारण होली के अगले दिन नया महीना तो आरंभ हो जाता है, लेकिन हिंदू नववर्ष लगभग पंद्रह दिन बाद शुरू होता है। शास्त्रों के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही सतयुग का आरंभ माना गया है। इस महीने में सूर्य अपनी उच्च राशि में होता है और वसंत ऋतु का आगमन होता है। इसलिए इसे 'भक्ति और संयम' का महीना भी कहा जाता है। इसी तिथि को ईरान में नौरोज के रूप में नया वर्ष मनाया जाता है। तिथि और पर्वों का निर्धारण करने वाले ग्रंथ निर्णय सिंधु, हेमाद्रि और धर्म सिंधु में इस तिथि को अत्यंत पुण्यदायी बताया गया है। ब्रह्मांड पुराण में भी इस दिन नए संवत्सर की पूजा का विधान बताया गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष प्रतिपदा के दिन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग पर्व मनाए जाते हैं-महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, कश्मीर में नवरेह, सिंध में चेटीचंड, केरल में विशु, असम में रोंगाली बिहू आदि। इसी समय चैत्र नवरात्रि आरंभ होती है और आगे चलकर रामनवमी तक उत्सव का क्रम चलता है।

हिंदू नववर्ष का ऐतिहासिक, प्राकृतिक महत्व:-

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्व भी है। इसी दिन राजा रामचंद्र का राज्याभिषेक हुआ था, धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था, सिख परंपरा के द्वितीय गुरु गुरु अंगद देव का जन्म हुआ था। यह दिन आर्य समाज की स्थापना का दिवस भी है। इसके साथ ही सिंधी समाज के आराध्य संत झूलेलाल का जन्मदिवस और केशव राव बलीराम हेडगेवार का जन्मदिवस भी इसी दिन माना जाता है।प्राकृतिक दृष्टि से भी यह समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस अवधि में किसानों की फसलें पकने लगती हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से भी यह समय शुभ माना गया है और किसी भी नए कार्य को प्रारंभ करने के लिए यह अत्यंत उत्तम मुहूर्त माना जाता है। इतिहास के अनुसार विक्रम संवत की शुरुआत 58 ईसा पूर्व उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य ने खगोलविदों की सहायता से व्यवस्थित रूप से की थी। विक्रम संवत का कैलेंडर सूर्य और चंद्रमा दोनों की गति पर आधारित है। कहा जाता है कि बारह माह का वर्ष और सात दिन का सप्ताह रखने की परंपरा भी इसी कालगणना से विकसित हुई, जिसे बाद में यूनानियों के माध्यम से अरब और अंग्रेजों ने अपनाया।इसके विपरीत अंग्रेजी नववर्ष का संबंध रोमन शासक जूलियस सीज़र से माना जाता है, जिन्होंने ईसा पूर्व 45 में जूलियन कैलेंडर लागू किया और पहली जनवरी को वर्षारंभ घोषित किया।वास्तव में भारतीय नववर्ष प्रकृति, ऋतु परिवर्तन और खगोलीय घटनाओं से जुड़ा हुआ है, जबकि अंग्रेजी नववर्ष केवल कैलेंडर परिवर्तन का प्रतीक है। यही कारण है कि चैत्र मास के आगमन के साथ प्रकृति में नवजीवन का संचार दिखाई देता है-पेड़ों में नई कोपलें, फूलों की खुशबू और वातावरण में ताजगी का अनुभव होता है। दक्षिण भारत और महाराष्ट्र में इस दिन घरों के द्वार पर आम के पत्तों का तोरण लगाया जाता है, जो समृद्धि और शुभता का प्रतीक माना जाता है। कर्नाटक में उगादि के अवसर पर नीम की कोपल और गुड़ से बना प्रसाद 'बेवू-बेला' खाया जाता है, जो जीवन के कड़वे-मीठे अनुभवों को समान भाव से स्वीकार करने का संदेश देता है। महाराष्ट्र में 'पूरन पोली' बनाकर इस पर्व की खुशियां साझा की जाती हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि 'युगादि' शब्द स्वयं नए युग के आरंभ का प्रतीक है। यह केवल कैलेंडर बदलने का संकेत नहीं, बल्कि नवचेतना, नई आशाओं और नए संकल्पों के उदय का संदेश देता है। भारतीय संस्कृति में समय को केवल दिनों और महीनों की गणना तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि उसे सृष्टि और प्रकृति के अनंत चक्र से जोड़ा गया है।नवसंवत्सर केवल एक नए वर्ष की शुरुआत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, प्रकृति और आध्यात्मिक चेतना के पुनर्जागरण का पावन अवसर है। यह हमें नए संकल्प लेने, सकारात्मक सोच अपनाने और सदाचार के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस दिन हम अपने जीवन में नई ऊर्जा, नई आशा और नए उत्साह का स्वागत करते हैं तथा अपनी परंपराओं से जुड़कर बेहतर भविष्य की ओर बढ़ने का संकल्प लेते हैं। अतः आवश्यक है कि हम अपनी इस गौरवशाली परंपरा को पहचानें, उसका संरक्षण करें और नई पीढ़ी को भी नवसंवत्सर के महत्व से परिचित कराएं, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी हमारी सनातन संस्कृति, परंपराओं और उनकी वैज्ञानिकता पर गर्व कर सकें।

शून्य' ही एकमात्र ऐसी परम वस्तु है जो सदा-सर्वदा स्वयंसिद्ध

पिंकी कुंडू

शून्य से शून्य के बीच जो कुछ भी दृश्यमान या अनुभव न्य है, वह केवल साध्य (प्राप्त करने योग्य वस्तु) है। इसके विपरीत, 'शून्य' ही एकमात्र ऐसी परम वस्तु है जो सदा-सर्वदा स्वयंसिद्ध है। इसे सिद्ध करने के लिए किसी बाहरी प्रयास की आवश्यकता नहीं है, क्योंकिः

*** यह हर काल और समय से परे है।**

* यह हर अवस्था (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) में विद्यमान है।

* यह हर योनि और हर परिस्थिति में अपरिवर्तित रहता है।

द्वितीयः यहाँ हमारी साधना में एक मौलिक चूक हो रही है। जो तत्व पहले से ही सिद्ध है, उसे हम निरंतर 'साधने' का व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं। सत्य तो यह है कि वह साधने योग्य तत्व है ही नहीं, क्योंकि वह पहले से ही पूर्ण है। दूसरी ओर, जो वस्तु वास्तव में साधने योग्य है (हमारा मन, अहंकार या शरीर), उसे साधने के बजाय हम उसे नित्य धारण किए जा रहे हैं। हम अपनी सीमाओं और पहचान को पकड़े हुए हैं, जिससे मुक्त होना अनिवार्य था।

तृतीयः जब तक हम उस 'सिद्ध तत्व' (शून्य) को एक लक्ष्य की तरह खोजते रहेंगे, तब तक उसकी

प्राप्ति असंभव है।

सार : जो सिद्ध है उसे खोजने की आवश्यकता नहीं, बल्कि जो हमने 'धारण' कर रखा है (अज्ञान और माया), उसे छोड़ने की आवश्यकता है। जब साध्य वस्तु का मोह छूटेगा, तब स्वयंसिद्ध शून्य स्वतः प्रकट होगा।

नवरात्र : मां दुर्गा की पूजा का श्रेष्ठ समय

नवरात्र हिंदू धर्म ग्रंथ एवं पुराणों के अनुसार माता भगवती की आराधना का श्रेष्ठ समय होता है। भारत में नवरात्र का पर्व एक ऐसा पर्व है जो हमारी संस्कृति में महिलाओं के गरिमामय स्थान को दर्शाता है। वर्ष में चार नवरात्र चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ महीने की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन के होते हैं, परंतु प्रसिद्धि में चैत्र और आश्विन के नवरात्र ही मुख्य माने जाते हैं। इनमें भी देवीभक्त आश्विन के नवरात्र अधिक करते हैं। इनको यथाक्रम वासंती और शारदीय नवरात्र भी कहते हैं। इनका आरंभ क्रमशः चैत्र और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से होता है

चैत्र या वासंती नवरात्र

ज़्यादा जानें
हिमाचल के नक्शे
हिमाचल समाचार सदस्यता
ब्रेकिंग न्यूज़ अलर्ट
धार्मिक पुस्तकें
कर्मचारी समाचार पोर्टल
ई-पेपर सदस्यता
वीडियो समाचार बुलेटिन

चैत्र या वासंती नवरात्र का प्रारंभ चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा से होता है। चैत्र में आने वाले नवरात्र में अपने कुल देवी-देवताओं की पूजा का विशेष प्रावधान माना गया है। वैसे दोनों ही नवरात्र मनाए जाते हैं, फिर भी इस नवरात्र को कुल देवी-देवताओं के पूजन की दृष्टि से विशेष माना जाता है। आज के भागमभाग के युग में अधिकांश लोग अपने कुल देवी-देवताओं को भूलते जा रहे हैं। कुछ लोग समयाभाव के कारण भी पूजा-पाठ में कम ध्यान दे पाते हैं। जबकि इस ओर ध्यान देकर आने वाली अनजान मुसीबतों से बचा जा सकता है। ये कोई अंधविश्वास नहीं, बल्कि

शाश्वत सत्य है।

नौ देवियां

नौ दिन यानी हिंदी माह चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष की पड़वा यानी पहली तिथि से नौवीं तिथि तक प्रत्येक दिन की एक देवी मतलब नौ द्वार वाले दुर्ग के भीतर रहने वाली जीवनी शक्ति रूपी दुर्गा के नौ रूप हैं : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री।

पुराणों में नवरात्र

मान्यता है कि नवरात्र में महाशक्ति की पूजा कर श्रीराम ने अपनी खोई हुई शक्ति पाई, इसलिए इस समय आदिशक्ति की आराधना पर विशेष बल दिया गया है। मार्कंडेय पुराण के अनुसार दुर्गा सप्तशती में स्वयं भगवती ने इस समय शक्ति-पूजा को महापूजा बताया है। कलश स्थापना, देवी दुर्गा की स्तुति, सुमधुर घंटियों की आवाज, धूप-बत्तियों की सुगंध – यह नौ दिनों तक चलने वाले साधना पर्व नवरात्र का चित्रण है।

कन्या पूजन

अष्टमी और नवमी दोनों ही दिन कन्या पूजन और लोंगड़ा पूजन किया जा सकता है। अतः श्रद्धापूर्वक कन्या पूजन करना चाहिए। सर्वप्रथम मां जगदंबा के सभी नौ स्वरूपों का स्मरण करते हुए घर में प्रवेश करते ही कन्याओं के पांव धोएं। इसके बाद उन्हें उचित आसन पर बैठाकर उनके हाथ में मौली बांधें और माथे पर बिंदी लगाएं। उनकी थाली में हलवा-पूरी और चने परोसें। अब अपनी पूजा की थाली जिसमें दो पूरी और हलवा-चने रखे हुए हैं, के चारों ओर हलवा और चना भी रखें। बीच में आटे से बने एक दीपक को शुद्ध घी से जलाएं। कन्या पूजन के बाद सभी कन्याओं को अपनी थाली में से यही प्रसाद खाने को दें। अब कन्याओं को उचित उपहार तथा कुछ राशि भी भेंट में दें। 'जय माता दी' कहकर उनके चरण छुएं और उनके प्रस्थान के बाद स्वयं प्रसाद खाने से पहले पूरे घर में खेत्री के पास रखे कुंभ का जल सारे घर में बरसाएं।

नवरात्र कथा

पौराणिक कथानुसार प्राचीन काल में दुर्गम नामक राक्षस ने कठोर तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर लिया। उनसे वरदान लेने के बाद चारों वेद व पुराणों को कब्जे में लेकर कहीं छिपा दिया, जिस कारण पूरे संसार में वैदिक कर्म बंद हो गया। इस वजह से चारों ओर घोर अकाल पड़ गया। पेड़-पौधे व नदी-नाले सूखने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। जीव-जंतु मरने लगे। सृष्टि का विनाश होने लगा। सृष्टि को बचाने के लिए देवताओं ने व्रत रखकर नौ दिन तक मां जगदंबा की आराधना की और माता से सृष्टि को बचाने की विनती की। तब मां भगवती व असुर दुर्गम के बीच घमासान युद्ध हुआ। मां भगवती ने दुर्गम का वध कर देवताओं को निर्भय कर दिया। तभी से नवदुर्गा तथा नव व्रत का शुभारंभ हुआ।

जिह्वायतौ वृद्धिविनाशौ

भारतीय ज्ञान परंपरा में मनुष्य के जीवन को दिशा देने वाले अनेक सूक्त और लोकोक्तियां मिलती हैं। इनमें जीवन के गूढ़ सत्य भी अत्यंत सरल शब्दों में व्यक्त किए गए हैं। ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण उक्ति है- 'जिह्वायतौ वृद्धिविनाशौ।' अर्थात मनुष्य की वृद्धि और विनाश दोनों उसकी जिह्वा पर निर्भर करते हैं। यह छोटा-सा वाक्य मानव जीवन के महत्वपूर्ण सत्य को उद्घाटित करता है कि मनुष्य की वाणी ही उसके उत्थान और पतन का कारण बन सकती है। मनुष्य का व्यक्तित्व केवल उसके ज्ञान या पद से नहीं बनता है, बल्कि उसके बोलने के ढंग से भी बनता है। जो व्यक्ति अपने सहकर्मियों, मित्रों और समाज के लोगों से सम्मानपूर्वक संवाद करता है, वह सहज ही सबके हृदय में स्थान बना लेता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति कटु, अपमानजनक या अभद्र शब्दों का प्रयोग करता है, वह धीरे-धीरे समाज में अपने सम्मान को खो देता है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने बार-बार वाणी के संयम और मधुरता पर बल दिया है। भारतीय ग्रंथों में वाणी की शक्ति का वर्णन अनेक स्थानों पर मिलता है। 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्' का उपदेश बताता है कि सत्य बोलना आवश्यक है, परंतु वह सत्य भी प्रिय और मधुर होना चाहिए। केवल सत्य बोलना ही पर्याप्त नहीं है। सत्य को किस ढंग से कहा जा रहा है, यह भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कठोर शब्द सत्य को भी अप्रिय बना देते हैं, जबकि मधुर शब्द कठिन परिस्थितियों को भी सहज बना देते हैं। इसी संदर्भ में एक अन्य लोकोक्ति कही गई है- 'स्तुतापि देवास्तुष्यन्ति।' अर्थात स्तुति से तो अदृश्य देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं। जब देवताओं तक को मधुर वाणी और स्तुति प्रिय लगती है, तब मनुष्य का तो कहना ही क्या। यह उक्ति हमें यही समझाती है कि वाणी में यदि मधुरता और सम्मान का भाव हो, तो वह संबंधों को सुदृढ़ बनाती है और अनेक कठिन कार्यों को भी सरल कर देती है। रामायण में भगवान राम के व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण गुण उनका मधुर और संयत भाषण बताया गया है। कहा जाता है कि वे कभी भी कठोर वचन नहीं बोलते थे। उनके शब्दों में विनम्रता और करुणा का भाव होता था।

इसलिए वे सहज ही सबके प्रिय बन गए। चाहे वह निषादराज हों, केवट हों या वनवासी ऋषि- सभी उनके मधुर व्यवहार से प्रभावित थे। यही कारण था कि विपरीत परिस्थितियों में भी लोगों का प्रेम और सहयोग उन्हें निरंतर मिलता रहा। इसके विपरीत रामायण में रावण तथा महाभारत में दुर्योधन और दुशासन जैसे पात्रों के कठोर और अपमानजनक शब्दों ने पूरे वंश के विनाश का मार्ग प्रशस्त किया। द्रौपदी के प्रति सभा में बोले गए अपमानजनक शब्दों ने ऐसी अग्नि को जन्म दिया, जिसने अंततः महाभारत के युद्ध का रूप ले लिया। यह बतलाता है कि असंयमित वाणी कितने भयंकर परिणामों को जन्म दे सकती है। भारतीय परंपरा में यह भी माना गया है कि वाणी में केवल शब्द ही नहीं होते, बल्कि भाव और ऊर्जा भी समाहित होती है। जब कोई व्यक्ति प्रेम, सम्मान और सद्भाव से बोलता है, तो उसके शब्दों में सकारात्मक ऊर्जा होती है, जो सामने वाले के मन को स्पर्श करती है। इसके विपरीत क्रोध, अहंकार और द्वेष से भरे शब्द वातावरण में नकारात्मकता फैलाते हैं। मगर मधुर वाणी का अर्थ केवल चापलूसी या अनावश्यक प्रशंसा नहीं है।

सच्ची स्तुति वह है, जिसमें किसी के वास्तविक गुणों का सम्मानपूर्वक उल्लेख किया जाए। समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों के गुणों का गान करना वस्तुतः एक प्रकार की लोकसेवा है, क्योंकि इससे समाज में सकारात्मक मूल्यों का प्रसार होता है। जब हम किसी के सद्गुणों की प्रशंसा करते हैं, तो वह व्यक्ति उन गुणों को और अधिक विकसित करने के लिए प्रेरित होता है। यदि हम अपने दैनिक जीवन में इस सिद्धांत को अपनाएं कि हमारे शब्द किसी को आहत न करें और जहां संभव हो वहां प्रेरणा और प्रोत्साहन दें, तो समाज में सौहार्द और सहयोग की भावना बढ़ सकती है। मनुष्य की जिह्वा एक छोटी-सी शक्ति है, परंतु उसका प्रभाव अत्यंत व्यापक होता है। वही जिह्वा किसी के हृदय को जीत सकती है और वही किसी संबंध को तोड़ भी सकती है। इसलिए हमारे ऋषियों ने चेतावनी दी है कि मनुष्य को अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए।

-डा. रविंद्र सिंह भड़वाल, शिक्षाविद

आमजन को स्वच्छ पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करे विभाग : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिला जल एवं स्वच्छता मिशन की सातवीं बैठक में दिए अधिकारियों को जरूरी निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,16 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में सोमवार को लघु सचिवालय सभागार में जिला जल एवं स्वच्छता मिशन (डीडबल्यूएसएम) की सातवीं बैठक आयोजित हुई।

इससे पहले जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधीक्षण अभियंता अमित श्योकन्द ने डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल का स्वागत किया और 22 मार्च तक चलने वाले जल महोत्सव पखवाड़ा की विस्तृत जानकारी दी।

इस अवसर पर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि आमजन को स्वच्छ पेयजल आपूर्ति प्रदान करना सरकार और प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

उन्होंने कहा कि नागरिकों को शुद्ध पेयजल समुचित मात्रा में मिले, इसके लिए गर्मी के मौसम को देखते हुए विभाग अभी से विशेष कार्ययोजना बनाकर कार्य करें। उन्होंने ग्रामीण व शहरी पेयजल उपभोक्ताओं को बकाया पेयजल बिल अदा करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, सिंचाई विभाग, पंचायत विभाग व बिजली विभाग को आपसी समन्वय के साथ कार्य करना होगा ताकि गर्मी के मौसम में नागरिकों को पेयजल की किल्ल्त का सामना न करना पड़े। इसके साथ ही लीकेज व इंसेंटरी पेयजल कनेक्शन, बिना टूटी के खुले चल रहें नलों को चिन्हित करने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए।

डीसी ने जल महोत्सव को लेकर अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आम जन को जल संरक्षण, जल प्रबंधन व पेयजल की शुद्धता से जुड़े विभिन्न मुद्दों को लेकर जागरूक करना है, ताकि आम जन की सहभागिता हो सके।

बैठक में नोडल ऑफिसर एक्सईएन अश्वनी सांगवान ने विभाग की समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि जल महोत्सव पखवाड़ा के तहत जल अर्पण दिवस, विश्व महिला दिवस व वर्ल्ड पलंबर डे कार्यक्रम का सफल आयोजन किया जा चुका है वहीं 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जायेगा। उन्होंने आम जन से भी पेयजल बिल समय पर अदा करने की अपील की।

यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, जनस्वास्थ्य विभाग के एसई अमित श्योकंद, डीडीपीओ निशा तंवर, कार्यकारी अभियंता अश्विनी सांगवान, बहादुरगढ से एक्सईएन अमन मोर, राजेश कौशिक, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी के जिला सलाहकार श्याम अहलावत, सिंचाई विभाग से पुनीत कुमार, शिक्षा विभाग से राजबाला सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

दिव्यांगजनों की मदद करना पुण्य का कार्य : एसडीएम

परिवहन विशेष न्यूज

बेरी स्थित लघु सचिवालय परिसर में एसडीएम रेणुका नांदल, मोटराइज्ड ट्राई साइकिल के लिए बैटरियां भेंट कीं

बेरी (झज्जर), 16 मार्च। बेरी की एसडीएम रेणुका नांदल ने मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देते हुए एक दिव्यांगजन को उसकी मोटराइज्ड ट्राई साइकिल के लिए नई बैटरियां भेंट कीं। यह बैटरियां सोमवार को बेरी स्थित लघु सचिवालय परिसर में प्रदान की गईं, जिससे दिव्यांगजन को आवागमन में काफी सुविधा मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि गत सप्ताह दिव्यांगजन बाघपुर निवासी देवेंद्र सिंह ने एसडीएम कार्यालय में पहुंचकर अपनी मोटराइज्ड ट्राई साइकिल की खराब हो चुकी बैटरियों को बदलवाने की मांग रखी थी। बैटरियों के खराब होने के कारण उन्हें रोजमर्रा के कार्यों और आवागमन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था।

मामले की गंभीरता को समझते हुए एसडीएम रेणुका नांदल ने तुरंत जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव को आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उनके निर्देशों के बाद रेडक्रॉस सोसायटी की ओर से मोटराइज्ड ट्राई साइकिल के लिए नई बैटरियों की व्यवस्था करवाई गई।

सोमवार को लघु सचिवालय परिसर में एसडीएम रेणुका नांदल ने दिव्यांगजन देवेन्द्र सिंह को दोनों बैटरियां सौंपते हुए उन्हें इसका सही तरीके से उपयोग करने और आत्मनिर्भर बनकर जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि प्रशासन हमेशा जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए तत्पर रहता है और दिव्यांगजन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना प्रशासन की प्राथमिकता है।

इस दौरान दिव्यांगजन देवेंद्र सिंह ने एसडीएम रेणुका नांदल और जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नई बैटरियां मिलने से उन्हें अब आवागमन में काफी सुविधा होगी और वे अपने दैनिक कार्य आसानी से कर सकेंगे।

अधिकारी समाधान शिविर की हर शिकायत का यथाशीघ्र करें उचित निपटारा : डीसी

एक छत के नीचे सभी विभागों से संबंधित हर शिकायत के तुरंत निपटारे के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे समाधान शिविर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिला स्तरीय समाधान शिविर में सुनी समस्याएं

झज्जर, 16 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में प्राप्त हर शिकायत का यथाशीघ्र उचित निपटारा सुनिश्चित करें। समाधान शिविर में हर विभाग से संबंधित हर शिकायत का एक छत के नीचे तुरंत निपटारा करने का लक्ष्य रखा गया है।

डीसी सोमवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित जिला स्तरीय समाधान शिविर में नागरिकों की समस्या सुन रहे थे। समाधान शिविर में लगभग एक दर्जन शिकायतें दर्ज की गई हैं।

डीसी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा हर सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय एवं बहादुरगढ़, बेरी व बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

डीसी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविरों की शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद करें। अधिकारी नागरिक को शिकायत निपटारे के लिए विभाग द्वारा की जा रही कार्यवाही की जानकारी देकर संतुष्ट करें, ताकि शिकायत का स्थायी समाधान हो सके।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, सीटीएम नमिता कुमारी, सतेंद्र जाखड़ सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व गणमान्य व्यक्तिउपस्थित रहे।

झज्जर में बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों की सुनवाई के लिए बिजली अदालत(17 मार्च)आज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 मार्च। उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) द्वारा अधीक्षण अभियंता कार्यालय में आज 17 मार्च मंगलवार को बिजली अदालत व उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन किया जाएगा। बिजली अदालत तथा उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक किया जाएगा।

यह अदालत फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता ऑपरेशन सर्कल झज्जर की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों को झज्जर कार्यालय में सुना जाएगा। इस दौरान बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवादों की समीक्षा की जाएगी।

कानपुर में अधिवक्ता चेंबर के बाहर पता नहीं क्यों फांसी पर लटक गया मुंशी, जांच शुरू

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां एक वकील का मुंशी फांसी पर लटक गया । उसने आत्महत्या की इस घटना को कचहरी परिसर में अधिवक्ता के चैंबर के बाहर लगी रेलिंग के सहारे अंजाम दिया। पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। घटना की वजह अभी तक पता नहीं चल पाई है । पुलिस मामले की जांच में लगी है।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक हरबंश मोहाल दानाखोरी निवासी 39 वर्षीय आदित्य विक्रम शर्मा अधिवक्ता मयंक गोयल के यहां 15 साल से मुंशी का काम कर रहे थे। परिवार में बड़ा भाई राम विक्रम शर्मा, अभिजीत विक्रम व एक शादीशुदा बहन गीतांजलि है। वहीं दूसरी ओर मौके पर पहुंची पुलिस को भाई अभिजीत ने बताया कि रविवार शाम आदित्य कुछ देर में घर आने की बात कहकर निकले थे, इसके बाद वह घर नहीं आए। इसी के बाद आदित्य के फांसी लगाकर आत्महत्या करने की जानकारी मिली। उसे सबसे पहले फांसी पर लटके हुएएक चायवाले ने देखा था , जिसके बाद उसने इसकी सूचना पुलिस को दी। परिजनों के मुताबिक आदित्य पिछले तीन दिनों से किसी बात को लेकर काफी परेशान थे, लेकिन यह वजह क्या थी । इस बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं है। पुलिस ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज मामले की जांच की जा रही है।

पूर्व पार्षद विक्की रहेजा के आवास पर माता रानी का विशाल जागरण, श्रद्धालु हुए मंत्रमुग्ध

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) वार्ड नंबर 9 के पूर्व पार्षद विक्की रहेजा के आवास पर माता रानी के विशाल जागरण का भव्य आयोजन किया गया। इस धार्मिक कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर माता रानी के दरबार में हाजिरी लगाई और भजनों का आनंद लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत विक्की रहेजा एवं कविता रहेजा ने और समस्त रहेजा परिवार ने कार्यक्रम की शुरूआत कवलानंद महाराज जी का आशीर्वाद एवं दुआएं लेकर की। जागरण में करनाल से आए नारंग भजन ग्रुप ने अपने मधुर भजनों से श्रद्धालुओं को पूरी रात मंत्रमुग्ध कर दिया। भजनों के साथ-साथ झांकी टीम द्वारा भगवान की सुंदर और मनमोहक झांकियां प्रस्तुत की गईं, जिनके दर्शन कर श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। कार्यक्रम के दौरान सभी श्रद्धालुओं के लिए रात्रि भोजन (प्रसाद) की भी विशेष व्यवस्था की गई थी।

इसी महीने चार मार्च को पूर्व पार्षद विक्की रहेजा के माता पिता ओमप्रकाश रहेजा और शकुंतला रहेजा की 50 वी वैवाहिक वर्षगांठ भी थी तो कार्यक्रम में पहुंचे हुए रिश्तेदारों एवं अन्य गणमान्य जनों ने शुभकामनाएं भी दी एवं उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना भी की कार्यक्रम में सरदार हरदीप सिंह ने एक उनके ऊपर शायरी भी सुनाई ओर कार्ड पर लिखकर ओर उन्हें नोटो की माला पहनाकर शुभकामनाएं भी दी।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व विधायक हल्का बरवाला वेद नारंग, पूर्व विधायक हल्का बरवाला रामनिवास घोडेला, नगर परिषद बरवाला के चेयरमैन रमेश बैटरीवाला, भाजपा युवा मोर्चा हरियाणा के प्रदेश सचिव विपिन लोहिया, वाइस चेयरमैन रोशन घनघस और भाजपा मंडल अध्यक्ष मोनू संदूजा सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत कर माता रानी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

पार्षद, पूर्व पार्षद, जनप्रतिनिधि, अखिल भारतीय सेवा संघ, रोटरी क्लब, लायंस क्लब, फ्रेंड्स क्लब सहित अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारीयो ने पूर्व पार्षद विक्की रहेजा को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर विक्की रहेजा ने सभी अतिथियों और श्रद्धालुओं का स्वागत करते हुए कहा कि माता रानी की कृपा से ही समाज में सुख, शांति और समृद्धि बनी रहती है। उन्होंने कहा कि मां दुर्गा शक्ति, भक्ति और सेवा का प्रतीक हैं और उनकी आराधना से हर संकट दूर होता है। माता के दरबार में आने वाला हर श्रद्धालु अपनी मनोकामना लेकर आता है और माता रानी सभी की झोली खुशियों से भर देती हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज में भाईचारा, आस्था और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

कार्यक्रम के अंत में सभी श्रद्धालुओं ने माता रानी के जयकारों के साथ आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम में काफी संख्या में पार्षद, पूर्व पार्षद, जनप्रतिनिधि, अखिल भारतीय सेवा संघ, रोटरी क्लब, लायंस क्लब, फ्रेंड्स क्लब सहित अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारी, समस्त रहेजा परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

छात्रा खुशी हुड्डा और मनीषा राठी का जन्मदिवस इंस्ट्रक्टर प्रियंका जोशी की मौजूदगी में उत्साह से मनाया गया

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान पानीपत (महिला) में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही दो छात्राओं खुशी हुड्डा और मनीषा राठी का जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर दोनों छात्राओं ने अपनी क्लास इंस्ट्रक्टर प्रियंका जोशी के साथ केक काटकर जन्मदिन मनाया और आपस में खुशियां बांटी।

इस अवसर पर क्लास इंस्ट्रक्टर प्रियंका जोशी ने खुशी हुड्डा और मनीषा राठी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य और लंबी आयु की कामना की। उन्होंने कहा कि छात्राएं मेहनत और लगन के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें और जीवन में सफलता प्राप्त करें। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण से युवतियां आत्मनिर्भर बनती हैं और समाज में अपनी अलग पहचान स्थापित कर सकती हैं।

स मौके पर संस्थान की अन्य छात्राएं गरिमा सलूजा, रितु, पूजा और मोनिका भी मौजूद रहीं। सभी ने खुशी हुड्डा और मनीषा राठी को जन्मदिन की बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जन्मदिन के इस अवसर पर खुशी हुड्डा और मनीषा राठी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें अपने साथियों और शिक्षिका प्रियंका जोशी के साथ जन्मदिन मनाकर बहुत खुशी हुई। उन्होंने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि ऐसे अवसर आपसी प्रेम और भाईचारे को और मजबूत बनाते हैं।

लोकतंत्र को सशक्त बनाने में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्णः आशुतोष मिश्र

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। शहर के प्रतिष्ठित संस्थान गोल्डन रॉक ट्रेडिंग अकैडमी में एक गरिमामय सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें प्रेस क्लब गोरखपुर के अध्यक्ष अंकज धर द्विवेदी को पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में समाज, शिक्षा और संस्कृति से जुड़े अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही, जिससे आयोजन अत्यंत प्रेरणादायी और यादगार बन गया।

समारोह में वरिष्ठ शिक्षाविद् आशुतोष मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि पत्रकारिता समाज की चेतना को जागृत करने वाली एक महत्वपूर्ण शक्ति है। पत्रकारिता लोकतंत्र की वह मजबूत कड़ी है जो जनता और व्यवस्था के बीच सेतु का कार्य करती है। जब कलम सत्य के प्रति समर्पित होती है, तभी लोकतंत्र की आत्मा सशक्त और जागृत रहती है।जागरूक समाज का आधार सशक्त और जिम्मेदार पत्रकारिता है।

इस अवसर पर प्रेस क्लब अध्यक्ष अंकज धर द्विवेदी ने कहा कि पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाज के सामने सत्य को प्रस्तुत करना और जनहित के मुद्दों को मजबूती से उठाना है। उन्होंने कहा कि आज के समय में जब सूचना के अनेक माध्यम हैं, तब पत्रकारों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे सत्य, संतुलन और विश्वसनीयता को सर्वोपरि रखें। उन्होंने गोल्डन रॉक ट्रेडिंग अकैडमी द्वारा दिए गए इस सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे सम्मान पत्रकारों को और अधिक जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस अवसर पर गोरखपुरिया भोजपुरिया के सहसंस्थापक नरेंद्र मिश्र भी उपस्थित रहे। वहीं आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के वरिष्ठ कलाकार एवं उद्घोषक प्रभाकर शुक्ला ने अपने सुमधुर गीतों से कार्यक्रम को सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की और उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में विवेक सिंह, अजय पांडेय, राहुल तिवारी, नीरज धर द्विवेदी, डॉ रामप्रताप विश्वकर्मा, राजेंद्र द्विवेदी, हरिहर पांडेय, केशव पांडेय, दुर्गेश ओझा, प्रिंस पांडेय, अभिषेक राय, मुकुंद पांडेय, दीपक शुक्ला, संजय पांडेय, गुलाब पांडेय, सच्चितानंद मिश्रा तथा मनीष नायक सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामई उपस्थिति रही।

आज लगेगा विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। समाज सेवा और जनस्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मेदांता हॉस्पिटल, लखनऊ तथा गोरखपुर सिंधी यूथ फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में शहर में एक विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर आज मंगलवार, 17 मार्च 2026 को दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक कल्याण पैलेस, जटाशंकर, गोरखपुर में आयोजित होगा।

इस स्वास्थ्य शिविर में प्रख्यात चिकित्सक डॉ. हिमांशु शेखर पांडेय अपनी विशेषज्ञ टीम के साथ उपस्थित रहेंगे और मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श प्रदान करेंगे। शिविर में आने वाले लोगों को विभिन्न बीमारियों की जांच के साथ-साथ स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बारे में भी महत्वपूर्ण सलाह दी जाएगी।

इस संबंध में युवा सिंधी समाज, गोरखपुर के महामंत्री देवा केशवानी ने बताया कि समाज सेवा की भावना से प्रेरित होकर इस स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है, ताकि आम नागरिकों को विशेषज्ञ चिकित्सकों से निःशुल्क परामर्श और आवश्यक स्वास्थ्य जांच की सुविधा मिल सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बढ़ती जीवनशैली संबंधी बीमारियों को देखते हुए समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराना अत्यंत आवश्यक हो गया है और ऐसे शिविर लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ समय रहते रोगों की पहचान में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि सिंधी समाज सदैव सामाजिक सरोकारों और जनसेवा की भावना से प्रेरित होकर समाजहित के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है।

फरियादियों की शिकायतों का होगा तत्काल निस्तारण

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। 2020 बैच के आईपीएस अधिकारी पाटिल निमिष दशरथ ने सोमवार को कार्यालय पहुंचकर विधिवत रूप से एसपी सिटी का पदभार ग्रहण किया।इससे पहले गाजियाबाद में डीसीपी ट्रामा सेंटर के पद पर तैनात थे और वहां करीब तीन वर्षों तक ईमानदारी से अपनी सेवाएं दीं।

पदभार ग्रहण करने के बाद एसपी सिटी पाटिल निमिष दशरथ ने कहा कि गोरखपुर में जन केंद्रित पुलिसिंग को प्राथमिकता दी जाएगी, ताकि आम जनता को पुलिस से बेहतर सहायता मिल सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि फरियादियों की शिकायतों का तत्काल निस्तारण किया जाएगा, जिससे किसी भी शिकायतकर्ता को बार-बार थाने या कार्यालय के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने कहा कि पुलिस का उद्देश्य केवल घटना के बाद कार्रवाई करना नहीं, बल्कि घटना होने से पहले ही अपराध पर लगाम लगाना है। इसके लिए पुलिस टीम को सक्रिय और संवेदनशील तरीके से काम करने के निर्देश दिए जाएंगे।

एसपी सिटी ने बताया कि हर शिकायत की गंभीरता से जांच की जाएगी और यदि कोई अपराधी पाया जाता है तो उसके खिलाफ सख्त और सत्य कार्रवाई की जाएगी। वहीं उन्होंने यह भी कहा कि कई बार शिकायतें आपसी या जमीनी विवाद से जुड़ी होती हैं, जिनमें प्रशासन और न्यायालय की प्रक्रिया भी अहम होती है। इसलिए ऐसे मामलों में तथ्यों के आधार पर ही कार्रवाई की जाएगी।

सिंधी उत्सव के प्रचार हेतु दोपहिया वाहनों पर निकले युवा

नवयुवक मंडल की वाहन रैली में दिखी सिंधी समाज की एकता

मथुरा। सर पर भगवान झूलेलाल के फोटो की टोपी और झंडियां लिए, सफेद रंग के ड्रेसकोड के साथ जिलेभर के तमाम सिंधीजन संगठित होकर अपने टूव्हीलर वाहनों पर आयोलाल झूलेलाल के जयकारे लगाते हुए दिखे। इस वाहन रैली में सिंधी समाज की एकता स्पष्ट नजर आयी। मीडिया प्रभारी किशोर इसरानी ने बताया कि पूज्य सिन्धी जनरल पंचायत मथुरा द्वारा सिंधी उत्सव पखवाड़ा चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत 17 मार्च को कृष्णा आर्चिड में झूलेलाल ज्योत प्रज्वलित तथा रक्तदान कार्यक्रम, 20 मार्च को झूलेलाल जयंती चेटीचंड पर्व के प्रति समाज की सहभागिता बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी उद्देश्य से सोमवार को नगर में आमंत्रण यात्रा निकाली गई।

सिंधी नवयुवक मंडल द्वारा युवा अध्यक्ष तरूण लखवानी, उपाध्यक्ष मनोहर मंगलानी, महामंत्री तरूण नाजवानी, वरिष्ठ सदस्य गिरधारी नाथानी, कोषाध्यक्ष दीपक टेकवानी, मंत्री सतीश मंगलानी, मंत्री रवि चंदानी, ऑडिटर दिनेश केवलानी, चंदा मंत्री धर्मेंद्र खत्री, मीडिया प्रभारी ललित नाथानी, जितेंद्र उतवानी, मुकेश कोतकवानी आदि के नेतृत्व में वाहन रैली सुबह 8 बजे कृष्णा नगर पुलिस चौकी मुकुंद रिसोर्ट से शुरू हुई, जिसमें सिंधी समाज के सभी संगठनों की महिलाएं एवं पुरूष, सफेद ड्रेसकोड में भगवान झूलेलाल के जयकारे लगाते हुए बड़े अनुशासित ढंग से आते - जाते हुए राहगीरों को नवसंवत्सर की अग्रीम शुभकामनाएं देते हुए अपने

अपने टूव्हीलर वाहनों पर निकले। इसमें वरूणावतार झूलेलाल जयंती के प्रति सिंधीजनों का उत्साह चरम पर दिखा।

मुख्य संयोजक रामचंद्र खत्री द्वारा आमंत्रण यात्रा के माध्यम से अपील की गई कि सभी सजातीय सिंधीजन 20 मार्च को झूलेलाल जयंती पर अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर शिरकत करें। इस यात्रा के जरिए समाज की एकता का भव्य संदेश दिया गया। इसमें युवाओं का जोश देखते ही बनता था, वहीं अनिता चावला, भारती केवलानी, कोकल भाटिया, सपना मंगलानी सहित तमाम महिलाओं में भी अद्भुत उत्साह देखा गया। इसमें सिंधी जनरल पंचायत, लाड़ी लोहाणा सिंधी पंचायत, सिंधी वेलफेयर फाउंडेशन मिशन स्माइल, भारतीय सिंधु सभा, सिंधी महिला मंडल, सिंधी नवयुवक मंडल आदि संगठनों के सुरेश मेठवानी, जितेंद्र लालवानी, जीवतराम चंदानी, बसंत मंगलानी, भगवानदास बेबू , चंदन आडवाणी, झामनदास नाथानी सहित समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण शामिल थे। रैली का स्थान स्थान पर पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया। रैली कृष्णा नगर, भूतेश्वर, डीग गेट, दरेसी रोड, भरतपुर गेट, कोतवाली रोड, होली गेट, विकास बाजार होती हुई बहादुर पुरा स्थित स्वामी लीलाशाह सिंधी धर्मशाला पर समाप्त हुई।

मेरा वाला ऐसा नहीं

घर की ना घाट की लव-जिहाद की शिकार बनी स्त्रियाँ,
कुचली जाती है हँसती-खेलती ₹आनंद₹ कोमल कलियाँ,
अपनों के ही ख़िलाफ़ बगावत करती नासमझ बेटियाँ,
प्यार में धोखा खा ये गुमसुम गुमराह आधी टूटी स्त्रियाँ ।

जिनके लिए संजोएं माँ-बाप ने जीवन के रंगीन सपनें,
वो प्रेम में पड़ अनदेखा करे कौन पराए कौन है अपने,
आज को धकेल गर्त में छोड़ देती परिवार को तड़पनें,
ज्ञानेंद्रियों को नकार बस प्रेम की माला लगती जपने ।

आँखों पर पट्टी बाँध वे कहती मेरा वाला ऐसा नहीं,
विपरीत लिंग आकर्षण में गुम हो जाती हैं वे कहीं,
प्यार में अंधे होकर संस्कारों को भुलाना सही नहीं,
ये भी सच हर प्रेमी युगल शाहरुख खान-गौरी नहीं ।

पवित्र प्रेम को वो शारीरिक आर्थिक चमक समझती,
वास्तविकता से परे प्रेमी के प्रेम-जाल में नित रमती,
अपने स्वतंत्र अस्तित्व की बलि देने में देर नहीं लगाती,
स्वयं भविष्य को उजाड़ गलत फैसले की मार सहती ।

अंततः शर्मिंदा हो गलतियों पर करें वे इंसाफ की टेर,
मगर समय हाथ से निकल जाता हो जाती है बहुत देर,
बटोरती कुछ दिन वो फिर अखबारों की सुर्खियाँ घनेर,
पर सच यहीं मासूम सी जिंदगी हो जाती रेत जैसे ढेर ।

– मोनिका डागा "आनंद"

स्नेह माधुरी कुंज में नित्य लीला प्रविष्ट सन्त विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) के प्रथम स्मृति महोत्सव की धूम

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौरा नगर कॉलोनी (चार सम्प्रदाय आश्रम के पीछे) स्थित स्नेह माधुरी कुंज में चल रहे प्रख्यात सन्त नित्य लीला प्रविष्ट विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) के प्रथम स्मृति महोत्सव के अंतर्गत ब्राह्मण-ब्रजवासी सेवा का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।जिसमें पूज्य महाराजश्री की परम-कृपापात्र शिष्या साध्वी मीरा बहिनजी के निर्देशन में सैकड़ों विप्रों व ब्रजवासियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें दक्षिणा प्रदान की गई।तत्पश्चात समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं व शिष्य परिकर के द्वारा सन्त प्रवर विवेकानंद महाराज (मौनी बाबा) का पावन स्मरण किया गया।साथ ही उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई।

महोत्सव में प्रमुख समाजसेवी मुकेश खंडेलवाल, कुशलेश खंडेलवाल, प्रख्यात भजन गायक पण्डित दामोदर शर्मा, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री, बसन्त कुलकर्णी, ललित कुलकर्णी (भोपाल), मुरली दास महाराज, सुखदेव दास महाराज (काकाजी), फिल्मस्तान स्टूडियो के संचालक जॉनी भाटिया, पण्डित सुदामा शास्त्री, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रमुख शिक्षाविद् जगदीश नीलम, आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, पण्डित भरत शास्त्री, राधेश शर्मा, एडवोकेट आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

महोत्सव के मीडिया प्रभारी ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत 18 मार्च को सायं 03 बजे से विराट संत-विद्वत सम्मेलन आयोजित होगा।जिसमें कई प्रख्यात संत,विद्वान व धर्माचार्य आदि भाग लेंगे। इसके अलावा 28 मार्च को ब्रज गोपियों की सेवा एवं 29 मार्च को बाल गोपाल सेवा आदि के कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

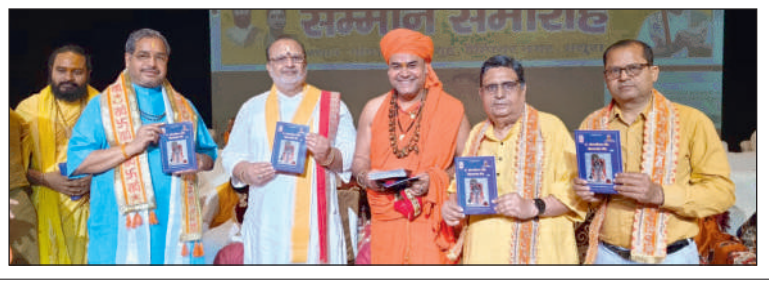

सिलेंडर को लेकर अफवाहों के बीच चौंकाने वाली सच्चाईः

अपील : गरीब-गुरबा महिलाओं का हक न छीनें, ग़रीब जरूरतमंद परिवारों तक पहुंचने दे मोदी सरकार की योजना का लाभः डॉ. राजेश खुराना

समाज में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का परिचय देना आज समय की सबसे बड़ी जरूरतः डॉ उमेश शर्मा

अपील - गरीब-गुरबा महिलाओं के अधिकारों का सम्मान किया जाए और उनका हक उनसे न छीना जाएः एडवोकेट अरविन्द पुष्कर

अफवाहों से बचें, शांति और विश्वास बनाए रखेंः चन्द्रवीर सिंह फौजदार

उत्तरप्रदेश, संजय साग़र सिंह। हाल के दिनों में रसोई गैस सिलेंडर की कमी को लेकर फैल रही अफवाहों के बीच एक चिंताजनक स्थिति सामने आई है। कई स्थानों पर यह देखा गया है कि सरकार द्वारा गरीब परिवारों के लिए चलाई जा रही योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्र ग़रीब परिवारों तक पहुंचने के बजाय आर्थिक रूप से सक्षम लोग उठा रहे हैं।

इस चिंताजनक स्तिथि पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए देशहित में, बताया कि रसोई गैस सिलेंडर की कमी को लेकर फैल रही अफवाहों के बीच एक चिंताजनक और चौंकाने वाली स्थिति सामने आई है। कई स्थानों पर यह देखने में आया है कि मोदी सरकार द्वारा गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए चलाई जा रही योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्र ग़रीब जरूरतमंद परिवारों तक पहुंचने के बजाय आर्थिक रूप से सक्षम लोग उठा रहे हैं। उन्होंने इस पर चिंता व्यक्त करते हुए समाज से अपील की है कि गरीबों के अधिकारों का सम्मान किया जाए और उनका हक उनसे न छीना जाए। उन्होंने कहा कि फिलहाल गैस सिलेंडर की कोई ऐसी वास्तविक कमी नहीं है, जिससे लोगों को घबराने की जरूरत पड़े। भारत में कुछ लालची जमाखोरी और कालाबजारी करने के लिए अफवाहे फैला रहें पुरे देश ने कोविड में देश की कैसे संकट के समय में आपदा को अवसर बनाया और 5 रूपये की वस्तु 50 रूपये में मनमानी से बेचीं। और अफवाह फैलाने बालों ने तो नमक को भी 200 रूपये तक का बिकबा दिया यही अफवाह फैलाने वालों की कड़बी सच्चाई हैं। इसलिए अफवाहों पर ध्यान देने के बजाय संयम और समझदारी से काम लेना चाहिए।

समाज में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का परिचय देना आज समय की सबसे बड़ी जरूरतः डॉ उमेश शर्मा

वरिष्ठ समाजसेवी डॉ उमेश शर्मा ने कहा कि अब देखा जा रहा हैं केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री योजना के तहत गरीब परिवारों को मुफ्त या रियायती दर पर दिए गए गैस सिलेंडर कई जगह ऐसे लोगों के पास पाए गए हैं, जो इन योजनाओं के पात्र नहीं हैं। इसके कारण असली जरूरतमंद परिवार इस सुविधा से वंचित रह जाते हैं। समाज के जिम्मेदार लोगों ने सभी से निवेदन किया है कि यदि किसी के पास गलती से गरीबों के लिए निर्धारित सिलेंडर या योजना का लाभ पहुंच गया है, तो उसे वापस कर दें, ताकि उसका लाभ उन ग़रीब परिवारों तक पहुंच सके जिन्हें वास्तव में इसकी जरूरत है। इस स्तिथि पर उन्होंने गंभीर चिंता जताते हुए अपील की है कि गरीबों के अधिकारों का सम्मान किया जाए और उनका हक उनसे न छीना जाए। उन्होंने कहा कि समाज में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का परिचय देना आज समय की सबसे बड़ी जरूरत है। यदि हर व्यक्ति ईमानदारी और जागरूकता के साथ आगे आए, तो सरकार की योजनाओं का सही लाभ गरीब और जरूरतमंद लोगों तक आसानी से पहुंच सकता है।

अपील - गरीब-गुरबा महिलाओं के अधिकारों का सम्मान किया जाए और उनका हक उनसे न छीना जाएः एडवोकेट अरविन्द पुष्कर

इस चिंताजनक विषय पर विशेषज्ञ एवं एडवोकेट अरविन्द पुष्कर ने बताया कि गरीब जरूरतमंद परिवारों को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना में दिया जाता(PMUY) है। इस योजना की शुरुआत 1 मई 2016 को उत्तर प्रदेश के बलिया से की गई थी। इस योजना के तहत अब तक 10 करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन का लाभ मिल चुका है। सरकार की इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य गरीबी रेखा से नीचे परिवारों की महिलाओं को धुआं-रहित रसोई ईंधन उपलब्ध कराना हैं जिससे उनके स्वास्थ्य की रक्षा हो सके। इसमें पहली बार सिलेंडर, चूल्हा, रेगुलेटर, और पाइप पूरी तरह से मुफ्त या सब्सिडी के साथ मिलता है। इस योजना विस्तार करते हुए का अगला चरण(उज्ज्वला 2.0) 10 अगस्त 2021 को शुरू किया गया था, जो प्रवासियों और वंचित परिवारों को कवर करता है। लाभार्थियों को अब 300 रुपये की सब्सिडी भी प्रति सिलेंडर (वर्ष में 9 या 12 सिलेंडर तक) मिलती है। लेक़नि कई ग़रीब बुरबा महिलाओं ने आरोप लगाते हुए बताया कि कुछ लालचीयों ने सरकार की इस मुफ्त योजना के लिए भी 1500 सौ रूपये लें लिए और उनसे कई चक्कर भी कटवाएं तब जाकर उनको कनेक्शन दिया। यही हैं ग़रीब के लिए चलाई जा रही योजनाओं की कड़बी सच्चाई लालची ग़रीब बुजुर्ग बेबाओं तक के पैसे खा जाते हैं और फ़रि यही लालची सरकार को कोसते हैं, जबकि दोषी वो स्वयं ही होते हैं।

अफवाहों से बचें, शांति और विश्वास बनाए रखेंः चन्द्रवीर सिंह फौजदार

वरिष्ठ समाजसेवी चन्द्रवीर सिंह फौजदार ने कहा इस खमखा की आपधापी में जगह जगह देखा जा रहा हैं कि सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत गरीब परिवारों को मुफ्त या रियायती दर पर दिए गए गैस सिलेंडर कई जगह ऐसे सक्षम लोगों के पास पाए गए हैं, जो इन योजनाओं के पात्र नहीं हो सकते हैं। ऐसे में समाज के जिम्मेदार लोगों ने सभी से निवेदन किया है कि यदि किसी के पास गलती से गरीबों के लिए निर्धारित सिलेंडर या योजना का लाभ पहुंच गया है, या पहुंच रहा हैं तो उसे तुरंत वापस कर दें, ताकि असली ग़रीब जरूरतमंद परिवार तक वह सुविधा पहुंच सके। उन्होंने आगे कहा कि फिलहाल गैस सिलेंडर की कोई ऐसी वास्तविक कमी नहीं है, जिससे आम जनता को घबराने की जरूरत हो। इसलिए अफवाहों से बचना और संयम बनाए रखना बेहद जरूरी है।

डीलर गैस न दे तो इन नंबरों पर करें शिकायत

यदि किसी कारण से गैस एजेंसी या डीलर गैस सिलेंडर देने में आनाकानी करता है, तो उपभोक्ता सीधे संबंधित कंपनी के हेल्पलाइन नंबरों पर शिकायत दर्ज करा सकते हैंः

भारत गैस हेल्पलाइनः 1800-22-4344 (टोल फ्री)

इंडेन गैस कस्टमर केयरः 1800-2333-555 (टोल फ्री)

एचपी गैस कस्टमर केयरः 1800-2333-555 (टोल फ्री)

अफवाहों से बचें, शांति और विश्वास बनाए रखें।

स्वच्छ पर्यावरण को व्यापक वृक्षारोपण की आवश्यकता है

● विजय गर्ग

वृक्षारोपण जैव विविधता को भी समर्थन देता है। जंगल और हरित क्षेत्र पक्षियों, जानवरों और कीटों को आश्रय और भोजन प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे जंगल लुप्त होते हैं, कई प्रजातियों को विलुप्त होने का खतरा रहता है। अधिक पेड़ लगाकर और मौजूदा जंगलों की सुरक्षा करके, हम वन्यजीवों के संरक्षण में मदद कर सकते हैं और हमारे ग्रह की समृद्ध जैव विविधता को बनाए रख सकते हैं।

एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण मानव जीवन और सतत विकास की नींव है। हाल के दशकों में, तेजी से औद्योगीकरण, शहरी विस्तार और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण गंभीर पर्यावरणीय गिरावट आई है। प्रदूषण का बढ़ता स्तर, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता की कमी स्पष्ट चेतावनी हैं कि हमारा पर्यावरण तनावग्रस्त है। इनमें से कई पर्यावरणीय समस्याओं का सबसे सरल किन्तु सबसे शक्तिशाली समाधान पर्याप्त वृक्षारोपण और पेड़ों तथा हरे आवरण की सुरक्षा है।

पेड़ों को अक्सर पृथ्वी का ₹पौधे₹ कहा जाता है वे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। यह प्राकृतिक प्रक्रिया वायुमंडल में गैसों के संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे हवा मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ हो जाती है। जब पेड़ों को उचित रूप से पुनः रोपने के बिना काटा जाता है, तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है और वायु की गुणवत्ता खराब हो जाती है।

जलवायु परिवर्तन से लड़ने में भी व्यापक वृक्षारोपण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पेड़ कार्बन सिंक का काम करते हैं, बड़ी मात्रा में कार्बन को संग्रहीत करते हैं और वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता को कम करते हैं। इसलिए, बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान ग्लोबल वार्मिंग को धीमा करने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

पेड़ों का एक और महत्वपूर्ण लाभ मिट्टी और जल संसाधनों की रक्षा में उनकी भूमिका है। पेड़ों की जड़ें मिट्टी को एक साथ रखती हैं और कटाव को रोकती हैं, विशेष रूप से भारी बारिश और बाढ़ के दौरान। पेड़ भूजल को पुनः चार्ज करने तथा श्वसन के माध्यम से प्राकृतिक जल चक्र को बनाए रखने में भी मदद करते हैं। पर्याप्त वनस्पति के बिना, भूमि शुष्क और बांझ हो जाती है, जो कृषि और खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करती है।

वृक्षारोपण जैव विविधता को भी समर्थन देता है। जंगल और हरित क्षेत्र पक्षियों, जानवरों और कीटों को आश्रय और भोजन प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे जंगल लुप्त होते हैं, कई प्रजातियों को विलुप्त होने का खतरा रहता है। अधिक पेड़ लगाकर और मौजूदा जंगलों की सुरक्षा करके, हम वन्यजीवों के संरक्षण में मदद कर सकते हैं और हमारे ग्रह की समृद्ध जैव विविधता को बनाए रख सकते हैं।

शहरी क्षेत्रों में, पेड़ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। वे ध्वनि प्रदूषण को कम करते हैं, छाया प्रदान करते हैं, तथा शीतलन प्रभाव पैदा करके तापमान को कम करते है। जिन शहरों में कंक्रीट संरचनाएं परिदृश्य पर हावी होती हैं, वहां हरित स्थान निवासियों के जीवन की गुणवत्ता और मानसिक कल्याण को बेहतर बनाते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि हरित वातावरण में रहने वाले लोगों का तनाव कम होता है और उनका स्वास्थ्य बेहतर होता है।

हालाँकि, वृक्षारोपण केवल सरकारी कार्यक्रमों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। जनता की भागीदारी आवश्यक है। स्कूलों, कॉलेजों, सामाजिक संगठनों और व्यक्तियों को वृक्षारोपण अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। पेड़ लगाना केवल पहला कदम है; जब तक वह एक मजबूत पौधे में विकसित नहीं हो जाता, तब तक उसका पोषण और सुरक्षा करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

दुनिया भर की सरकारें वृक्षारोपण के महत्व को तेजी से पहचान रही हैं। भारत में, ग्रीन इंडिया मिशन जैसी पहल वानिकीकरण और क्षतिग्रस्त जंगलों की बहाली को प्रोत्साहित करती हैं। ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य वन क्षेत्र को बढ़ाना और पर्यावरणीय स्थिरता में सुधार करना है।

निष्कर्षतः, पर्याप्त वृक्षारोपण केवल एक पर्यावरणीय गतिविधि नहीं है; यह भावी पीढ़ियों के प्रति जिम्मेदारी है। स्वच्छ वातावरण, स्थिर जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और समृद्ध जैव विविधता सभी पेड़ों की उपस्थिति पर निर्भर करते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनकाल में कुछ पेड़ भी लगाए और उनकी रक्षा करे, तो सामूहिक प्रयास हमारे ग्रह को एक हरित और स्वस्थ स्थान में बदल सकता है। इसलिए, वृक्षारोपण के माध्यम से प्रकृति की रक्षा करना मानवता के लिए एक टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में सबसे प्रभावी कदमों में से एक है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान

साझा चूल्हा: संकट से समाधान की राह

(महंगाई और ऊर्जा संकट के दौर में परंपरागत सामुदायिक सहयोग से समाज को सशक्त बनाने की जरूरत)

- डॉ. प्रियंका सौरभ

रसोई गैस सिलेंडर की कीमतों को लेकर समय-समय पर देश में राजनीतिक बहस तेज हो जाती है। विपक्ष इसे आम आदमी पर बढ़ते आर्थिक बोझ के रूप में उठाता है, तो सत्ता पक्ष अंतरराष्ट्रीय बाजार और वैश्विक परिस्थितियों का हवाला देता है। यह बहस लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा है, क्योंकि महंगाई और जीवनयापन की लागत सीधे जनता के जीवन को प्रभावित करती है। लेकिन इस पूरे विमर्श में अक्सर एक महत्वपूर्ण पक्ष छूट जाता है—समाज की अपनी सामूहिक शक्ति और संकट के समय मिल-जुलकर समाधान खोजने की क्षमता।

भारतीय समाज की मूल संरचना ही सामूहिकता पर आधारित रही है। यहाँ परिवार केवल पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित नहीं होता, बल्कि विस्तृत रिश्तों और समुदाय के साथ जुड़ा रहता है। गांवों में तो यह भावना और भी गहरी दिखाई देती है, जहाँ कठिन परिस्थितियों में पूरा समाज एक-दूसरे के साथ खड़ा होता है। इसी सामाजिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण प्रतीक रहा है—"साझा चूल्हा"।

साझा चूल्हा केवल भोजन पकाने का साधन नहीं था, बल्कि वह सामूहिक जीवन की भावना का केंद्र था। सीमित संसाधनों के दौर में कई परिवार मिलकर एक ही चूल्हे पर भोजन बनाते थे। इससे ईंधन की बचत होती थी, श्रम का बंटवारा होता था और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि समाज के लोगों के बीच संवाद और अपनापन बना रहता था। भोजन केवल पेट भरने का माध्यम नहीं रहता था, बल्कि वह सामाजिक संबंधों को मजबूत करने का अवसर बन जाता था।

समय के साथ जीवनशैली में बदलाव आया। तकनीकी विकास, शहरीकरण और आर्थिक प्रगति ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया, लेकिन सामूहिक परंपराओं को धीरे-धीरे कमजोर भी किया। आज लगभग हर घर में अलग रसोई और अलग चूल्हा है। यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता का प्रतीक भी माना जाता है। लेकिन इसके साथ ही समाज में एक प्रकार की दूरी भी बढ़ी है। पड़ोस में रहने वाले लोग भी कई बार एक-दूसरे से अपरिचित रह जाते हैं।

इसी संदर्भ में जब गैस सिलेंडर की बढ़ती कीमतों की चर्चा होती है, तो हमें केवल राजनीतिक बहस तक सीमित रहने के बजाय सामाजिक दृष्टि से भी सोचने की आवश्यकता है। क्या हम अपनी परंपराओं से कोई ऐसी सीख ले सकते हैं जो आज की परिस्थितियों में भी उपयोगी हो? "साझा चूल्हा" का विचार इसी दिशा में एक प्रेरक उदाहरण हो सकता है।

हमारे समाज में भंडारे और लंगर की परंपरा सदियों से चली आ रही है। धार्मिक आयोजनों, मंदिरों, गुरुद्वारों और अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में हजारों लोग एक ही रसोई से भोजन प्राप्त करते हैं। वहाँ न जाति का भेद होता है, न आर्थिक स्थिति का। सभी लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। यह परंपरा केवल सेवा भावना ही नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और एकता का भी प्रतीक है।

यदि समाज ऐसे बड़े आयोजनों में सामूहिक रसोई को सहजता से स्वीकार कर सकता है, तो फिर रोजमर्रा के जीवन में इस विचार को अपनाने में संकोच क्यों? यह आवश्यक नहीं कि हर जगह बड़े स्तर पर सामुदायिक रसोई स्थापित की जाए, लेकिन छोटे-छोटे स्तर पर भी सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है। उदाहरण के लिए, किसी मोहल्ले या समुदाय के कुछ परिवार मिलकर सामूहिक रूप से भोजन बनाने की व्यवस्था कर सकते हैं, विशेषकर उन परिस्थितियों में जब संसाधन सीमित हों या खर्च अधिक हो रहा हो।

यह विचार केवल आर्थिक बचत तक सीमित नहीं है। साझा चूल्हा समाज में सहयोग और संवाद की संस्कृति को भी मजबूत कर सकता है। जब लोग एक साथ बैठते हैं, काम करते हैं और भोजन साझा करते हैं, तो उनके बीच विश्वास और समझ बढ़ती है। सामाजिक तनाव कम होते हैं और समुदाय की एकजुटता मजबूत होती है।

खेती-किसानी, पशुपालन या अन्य श्रमसाध्य कार्यों से जुड़े लोग इस भावना को अधिक अच्छी तरह समझते हैं। ग्रामीण जीवन में श्रम और संसाधनों का साझा उपयोग एक सामान्य बात है। खेतों में काम के दौरान कई परिवार मिलकर भोजन की व्यवस्था करते हैं। त्योहारों और सामाजिक अवसरों पर भी सामूहिक भोजन की परंपरा देखने को मिलती है। यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि जीवन को सरल और संतुलित बनाने का एक व्यावहारिक तरीका भी है।

इसके विपरीत, आधुनिक शहरी जीवन ने कई लोगों को सुविधाओं के बीच तो रखा है, लेकिन उन्हें सामाजिक ताने-बाने से कुछ हद तक दूर भी कर दिया है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजी जीवन की अवधारणा ने सामूहिकता की भावना को कमजोर किया है। लोग अपने घरों में सीमित हो गए हैं और पड़ोस या समुदाय के साथ उनका संपर्क कम होता जा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि समाज में एक प्रकार का अकेलापन और अलगाव भी बढ़ रहा है।

ऐसे में साझा चूल्हा केवल आर्थिक या व्यावहारिक समाधान नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्संरचना का भी एक प्रतीक बन सकता है। यह हमें याद दिलाता है कि समाज की असली ताकत केवल सरकारी नीतियों में नहीं, बल्कि लोगों के आपसी सहयोग और एकता में भी होती है। जब समाज संगठित होता है, तो वह कई समस्याओं का समाधान स्वयं खोज लेता है।

बेशक, आज की परिस्थितियाँ पहले जैसी नहीं हैं। शहरों की जीवनशैली, काम के अलग-अलग समय और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण हर जगह साझा चूल्हा लागू करना संभव नहीं हो सकता। लेकिन इस विचार का मूल संदेश—सहयोग और साझेदारी—आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। यदि समाज इस भावना को अपनाए, तो कई समस्याओं का प्रभाव स्वतः कम हो सकता है।

दरअसल, संकट के समय समाज की असली परीक्षा होती है। इतिहास गवाह है कि जब भी कठिन परिस्थितियाँ आईं, भारतीय समाज ने सामूहिकता और सहयोग के बल पर उनका सामना किया है। प्राकृतिक आपदाओं से लेकर आर्थिक चुनौतियों तक, लोगों ने एक-दूसरे की मदद करके परिस्थितियों को संभाला है। यही हमारी सामाजिक संस्कृति की सबसे बड़ी ताकत है।

आज जब वैश्विक स्तर पर आर्थिक और ऊर्जा संबंधी चुनौतियाँ सामने हैं, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम केवल राजनीतिक विमर्श तक सीमित न रहें, बल्कि सामाजिक समाधान की दिशा में भी सोचें। साझा चूल्हा इसी सोच का एक प्रतीक हो सकता है—एक ऐसा प्रतीक जो हमें बताता है कि संकट केवल समस्या नहीं, बल्कि अवसर भी हो सकता है।

यदि समाज में सहयोग और साझेदारी की भावना मजबूत हो, तो कई कठिनाइयाँ आसान हो जाती हैं। जब लोग मिलकर काम करते हैं, तो संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है और समस्याओं का बोझ भी साझा हो जाता है। यही कारण है कि सामुदायिक जीवन की परंपराएँ सदियों तक हमारे समाज को स्थिर और मजबूत बनाए रखती रही हैं।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि साझा चूल्हा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की एक संभावित दिशा भी हो सकता है। यह हमें याद दिलाता है कि आधुनिकता और परंपरा विरोधी नहीं हैं; बल्कि यदि दोनों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए तो समाज और अधिक सशक्त बन सकता है।

इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी परंपराओं से मिलने वाले संदेश को समझें और उसे आधुनिक संदर्भों में लागू करने का प्रयास करें। यदि समाज सहयोग और साझेदारी की भावना को फिर से जीवित कर सके, तो केवल गैस सिलेंडर ही नहीं, बल्कि जीवन की कई अन्य चुनौतियाँ भी सहज रूप से हल हो सकती हैं।

साझा चूल्हा अंततः एक विचार है—एक ऐसा विचार जो बताता है कि जब समाज एक साथ खड़ा होता है, तो संकट भी अवसर बन सकता है और कठिन समय भी एक प्रकार के उत्सव में बदल सकता है। यही भारतीय सामाजिक संस्कृति की असली पहचान और ताकत है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

जैव विविधता के साथ टिकाऊ विकास

डॉ विजय गर्ग

धरती पर जीवन की विविधता ही प्रकृति की सबसे बड़ी शक्ति है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, सूक्ष्मजीव और मनुष्य—ये सभी मिलकर एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। इसी विविधता को जैव विविधता कहा जाता है। आज विकास की दौड़ में मानव ने प्रकृति के संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है, जिससे जैव विविधता को गंभीर खतरा पैदा हो गया है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो गया है कि विकास का मार्ग टिकाऊ विकास के सिद्धांतों पर आधारित हो, जिसमें प्रकृति और मानव दोनों का संतुलित हित सुरक्षित रहे।

जैव विविधता केवल पर्यावरण की सुंदरता ही नहीं बढ़ाती, बल्कि मानव जीवन के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। हमारी खाद्य श्रृंखला, औषधियाँ, कृषि, जल चक्र और जलवायु संतुलन—सब कुछ जैव विविधता पर निर्भर करता है। जंगलों में पाए जाने वाले अनेक पौधों से जीवन रक्षक दवाएँ बनती हैं। विविध फसलें और जीव-जंतु कृषि व्यवस्था को मजबूत बनाते हैं। यदि जैव विविधता घटती है तो पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर पड़ जाता है और अंततः इसका प्रभाव मानव जीवन पर भी पड़ता है।

आज विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना। बड़े-बड़े उद्योग, शहरीकरण, वनों की कटाई, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण अनेक प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गई हैं। विकास के नाम पर यदि प्रकृति को नुकसान पहुँचाया जाएगा तो इसका परिणाम भविष्य में गंभीर पर्यावरणीय संकट के रूप में सामने आएगा।

टिकाऊ विकास का अर्थ है—ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता न करे। इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। वनों का संरक्षण, जल स्रोतों की रक्षा, जैविक खेती को बढ़ावा, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग और प्रदूषण को नियंत्रित करना टिकाऊ विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

जैव विविधता के संरक्षण में स्थानीय समुदायों की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण और आदिवासी समाज सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जीते आए हैं। उनके पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान की भावना से हमें बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। यदि विकास की योजनाओं में स्थानीय समुदायों को शामिल किया जाए तो संरक्षण के प्रयास अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

इसके साथ ही सरकारों, वैज्ञानिकों और समाज के सभी वर्गों को मिलकर कार्य करना होगा। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों को यह समझाना जरूरी है कि जैव विविधता केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की भी सुरक्षा करती है। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को मजबूत बनाना भी समय की आवश्यकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि जैव विविधता और टिकाऊ विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि हम प्रकृति की विविधता को बचाते हैं, तो विकास की राह भी सुरक्षित और स्थायी बनती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विकास की नई सोच अपनाएँ—ऐसी सोच जो प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, बल्कि सहअस्तित्व का मार्ग दिखाए। तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और समृद्ध पृथ्वी सुनिश्चित की जा सकती है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संघर्ष और अस्थिरता के दौर में भरोसे का केंद्र बनता भारत

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

मध्य पूर्व में भड़का संघर्ष अब केवल क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था को प्रभावित करने वाला संकट बन गया है। अमेरिका-ईरान तनाव, इज़राइल से जुड़ी घटनाएँ और होर्मुज जलडमरूमध्य की अस्थिरता ने व्यापार व ऊर्जा आपूर्ति पर खतरा बढ़ाया है। ऐसे समय में भारत ने संतुलित और दूरदर्शी विदेश नीति का परिचय दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने ब्रिक्स जैसे मंच को सक्रिय कर सदस्य देशों के बीच संवाद को बढ़ावा दिया। भारत ने स्पष्ट किया कि युद्ध नहीं, बल्कि शांति, कूटनीति और सामूहिक प्रयास ही वैश्विक स्थिरता का आधार हैं। इसी कारण इस संकट में भारत एक जिम्मेदार और संतुलित शक्ति के रूप में उभरा है।

ब्रिक्स की अध्यक्षता संभालते ही मोदी सरकार ने संगठन में नई ऊर्जा भरने का प्रयास किया। "सहयोग, नवाचार और स्थिरता के माध्यम से लचीले भविष्य का निर्माण" की सोच के साथ भारत ने ब्रिक्स को केवल आर्थिक मंच नहीं, बल्कि वैश्विक समस्याओं के समाधान का माध्यम बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया। इस नीति का केंद्र विकासशील देशों की आवाज को विश्व राजनीति में उचित स्थान दिलाना रहा। भारत ने यह भी दिखाया कि जी20 की कूटनीतिक सफलता को ब्रिक्स में भी आगे बढ़ाया जा सकता है। मतभेदों के बावजूद भारत ने संवाद जारी रखा और संगठन में विभाजन को कम करने का प्रयास किया, हालाँकि पूर्ण सहमति बनाना चुनौतीपूर्ण रहा। यह नेतृत्व भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा को दर्शाता है।

संकट की घड़ी में भारत की कूटनीति का प्रमुख पहलू यह रहा कि उसने सभी ब्रिक्स देशों को एक साझा मंच पर लाने का प्रयास किया। बारह मार्च की वर्चुअल बैठक में भारत ने सदस्य देशों के बीच खुले और रचनात्मक संवाद को प्रोत्साहित किया। "शेरपा तंत्र" के माध्यम से लगातार बातचीत जारी रही, ताकि मतभेदों के बीच भी सहमति का मार्ग निकल सके। भारत का दृष्टिकोण स्पष्ट था—किसी पक्ष का समर्थन करने के बजाय शांति और स्थिरता के लिए सामूहिक प्रयास हों। इस पहल ने ब्रिक्स को केवल औपचारिक संगठन नहीं, बल्कि एक सक्रिय वैश्विक मंच के रूप में उभारने में मदद की और यह भारत की स्वतंत्र, संतुलित विदेश नीति का प्रमाण भी है।

बढ़ते क्षेत्रीय तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने व्यक्तिगत स्तर पर भी सक्रिय कूटनीति का परिचय दिया। उन्होंने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेज़ेश्कियान से टेलीफोन पर बातचीत कर स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त की। वार्ता में नागरिकों की सुरक्षा, बुनियादी ढांचे की रक्षा और संघर्ष को फैलने से रोकने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। भारत ने स्पष्ट किया कि संवाद और कूटनीति ही स्थायी समाधान का मार्ग है। साथ ही अमेरिका और इज़राइल जैसे देशों के साथ संबंधों का संतुलन भी बनाए रखा गया। यह बहुआयामी कूटनीति भारत की रणनीतिक परिपक्वता को दर्शाती है, जिसमें राष्ट्रीय हित, ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक स्थिरता तीनों को समान महत्व दिया गया है।

ब्रिक्स के भीतर स्थिति इसलिए भी जटिल थी क्योंकि कई सदस्य देश सीधे मध्य पूर्व की राजनीति से जुड़े हैं। ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों के अपने क्षेत्रीय हित हैं, जिनसे मतभेद स्वाभाविक हैं। इसके बावजूद भारत ने संयम और धैर्य के साथ संवाद को आगे बढ़ाया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा कि भारत लगातार सदस्य देशों के संपर्क में है और सहमति का मार्ग तलाश रहा है और कुछ सदस्यों के सीधे शामिल होने से सहमति बनाना चुनौतीपूर्ण है। भारत ने चीन और रूस जैसे प्रमुख देशों के साथ भी समन्वय बनाए रखा। इन प्रयासों ने ब्रिक्स की विश्वसनीयता को मजबूत किया और यह संदेश दिया कि विकासशील देशों का यह समूह वैश्विक मुद्दों पर प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

ऊर्जा सुरक्षा के मोर्चे पर भी मोदी सरकार ने अत्यंत दूरदर्शी कदम उठाए। मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास स्थिति संवेदनशील हो गई थी, जिससे वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित होने की आशंका थी। भारत ने कूटनीतिक माध्यमों से अपने तेल टैंकरों और ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित रखने के लिए सक्रिय प्रयास किए। इसके साथ ही सरकार ने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों, घरेलू गैस आपूर्ति और दीर्घकालिक ऊर्जा समझौतों पर भी ध्यान दिया। इन कदमों का परिणाम यह रहा कि वैश्विक संकट के बावजूद भारत में ऊर्जा आपूर्ति काफी हद तक स्थिर बनी रही, हालाँकि वैश्विक कीमतों में वृद्धि का असर पड़ा। यह दिखाता है कि भारत की विदेश नीति केवल कूटनीतिक बयान तक सीमित नहीं है, बल्कि सीधे तौर पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और जनता के हितों से जुड़ी हुई है।

वैश्विक संतुलन और सहयोग को नई दिशा देने की सोच के साथ मोदी सरकार की विदेश नीति ने बहुपक्षीय साझेदारी को प्रमुख प्राथमिकता बनाया है। ब्रिक्स के माध्यम से भारत ने स्पष्ट किया कि वैश्विक समस्याओं का समाधान केवल सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। विकासशील देशों की आवाज को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सशक्त बनाने के लिए भारत निरंतर सक्रिय रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कई बार कहा है कि विश्व व्यवस्था को अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण बनाना समय की मांग है। यही नीति भारत को वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए एक भरोसेमंद नेतृत्वकारी शक्ति बनाती है, और ब्रिक्स में उसकी सक्रिय भूमिका इसी व्यापक दृष्टि का परिणाम है।

संकटों से घिरे मध्य पूर्व के परिदृश्य में भारत की सक्रिय कूटनीति ने यह स्पष्ट संकेत दिया है कि देश अब वैश्विक राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाने की क्षमता और आत्मविश्वास दोनों रखता है। ब्रिक्स के भीतर एकजुटता स्थापित करने की पहल ने न केवल संगठन की प्रासंगिकता को सुदृढ़ किया, बल्कि भारत की विदेश नीति की परिपक्वता और संतुलित दृष्टि को भी उजागर किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में उठाए गए इन प्रभावी कदमों ने भारत को एक जिम्मेदार, विवेकपूर्ण और दूरदर्शी शक्ति के रूप में स्थापित किया है। आने वाले समय में यही कूटनीतिक दृष्टिकोण वैश्विक शांति, सहयोग और विकास के लिए एक मजबूत आधार सिद्ध हो सकता है और भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

हाय: बेरोजगारी व युवाओं का अनिश्चित भविष्य

भारत दुनिया के उन देशों में शामिल है, जहां युवाओं की संख्या सबसे अधिक है। यह स्थिति किसी भी राष्ट के लिए बड़ी ताकत मानी जाती है, क्योंकि युवा शक्ति ही विकास और प्रगति की असली नींव होती है। लेकिन आज देश के सामने एक गंभीर चुनौती यह भी है कि बड़ी संख्या में पढ़े-लिखे युवा रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं।

हर साल लाखों छात्र स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों से पढ़ाई पूरी करके नौकरी की उम्मीद के साथ निकलते हैं, लेकिन अवसर सीमित होने के कारण उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता है। सरकारी नौकरियों की संख्या कम है और उनकी भर्ती प्रक्रिया भी कई बार लंबी और जटिल हो जाती है। वहीं निजी क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर उतनी तेजी से नहीं बढ़ पा रहे हैं, जितनी तेजी से युवा कार्यबल तैयार हो रहा है।

बेरोजगारी का असर केवल आर्थिक स्थिति पर ही नहीं पड़ता, बल्कि यह युवाओं के आत्म-विश्वास और मानसिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। जब योग्य और मेहनती युवाओं को लंबे समय तक नौकरी नहीं मिलती, तो उनमें निराशा और असंतोष पैदा होने लगता है। यह स्थिति समाज और देश के भविष्य के लिए भी चिंता का विषय बन सकती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि रोजगार सृजन को नीति निर्माण का केंद्र बनाया जाए। उद्योगों को बढ़ावा देना, नए निवेश को आकर्षित करना, छोटे और मध्यम उद्यमों को मजबूत करना तथा कौशल विकास पर विशेष ध्यान देना ऐसे कदम हैं जो रोजगार के नए अवसर पैदा कर सकते हैं। इसके साथ ही शिक्षा व्यवस्था को भी समय की जरूरतों के अनुसार ढालना होगा, ताकि युवाओं को केवल डिग्री ही नहीं बल्कि रोजगार योग्य कौशल भी मिल सके।

युवा किसी भी देश की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यदि उनकी ऊर्जा और प्रतिभा को सही दिशा मिलती है तो वही देश को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि सरकार, उद्योग जगत और समाज मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहां हर युवा को अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने और देश के विकास में योगदान देने का अवसर मिल सके।

भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'
प्रशा० अधि०(RTD), बरेली (उ०प्र०).

संस्कृति व विरासत को संरक्षित रखना हमारा उद्देश्य:प्रभा तिवारी

वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन बिलासपुर ने आयोजित किया होली मिलन एवं महिला दिवस सम्मान समारोह महिला सम्मान एवं सामाजिक एकता का प्रतीक बना कार्यक्रम

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन महिला इकाई, जिला बिलासपुर की अध्यक्ष प्रभा तिवारी के द्वारा होली मिलन एवं महिला दिवस उपलक्ष्य में महिला सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य

महिला अध्यक्ष प्रभा तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि होली रंगों और खुशियों का प्रसिद्ध भारतीय त्यौहार है। यह वसंत ऋतु के आरंभ और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि फेडरेशन का उद्देश्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाना और संस्कृति व विरासत को संरक्षित रखना है।

मुख्य अतिथियों और सम्मानित बहनों की भूमिका

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विभा मिश्रा और रीता तिवारी ने स्मृति चिन्ह और पुष्प गुच्छ देकर 40 बहनों को सम्मानित किया। महिला अध्यक्ष प्रभा तिवारी ने सभी बहनों को होली की शुभकामनाएं दी और बताया कि इस वर्ष पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए फूलों की पंखुड़ियों और हर्बल गुलाल से होली खेली गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और होली की धूम

रीता तिवारी और अवनी बाजपेई ने राधा-कृष्ण के गीत प्रस्तुत किए।

रिंकी पांडे, सुनैना सिंह ने होली फाग गीतों पर बहनों के साथ उत्साहपूर्वक प्रदर्शन किया।

होली मिलन को रंगारंग बनाने में अनुष्का मिश्रा, रेखा दुबे ने अहम योगदान दिया।

प्रमुख उपस्थितियां

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ज्योति तिवारी, रिंकी पांडेय, विभा मिश्रा, करुणा तिवारी, अनुष्का मिश्रा, रीता तिवारी, अवनी बाजपेई, सविता पाठक, ममता मिश्रा, अंजू दीक्षित, पूर्णिमा दुबे, रानी, रेखा दुबे, सुनीता मिश्रा, रतना पांडेय, संध्या रत्ना पांडेय, चौबे, सुनयना सिंह, रेखा मिश्रा, अंजलि चौहान, पुष्पा पांडेय, पुष्प लता मिश्रा, मोनिका अचाई, सोनाली बोकाडे, अरुना शर्मा, करुणा दुबे, कंचन गुप्ता, संध्या चौबे, लक्ष्मी चौबे आदि उपस्थित रहे।

समापन और सामाजिक संदेश

अंत में सभी बहनों ने होली गीतों पर नृत्य किया, झूमकर उत्सव मनाया और स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाया। कार्यक्रम का आयोजन जिला अध्यक्ष प्रभा तिवारी ने किया, मंच संचालन ज्योति तिवारी ने संभाला, और आभार प्रदर्शन रेखा दुबे ने किया।

जन सेवा संघ द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन संपन्न हुआ।

जन सेवा संघ के मीडिया प्रभारी राजीव चौबे द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, जन सेवा संघ द्वारा हास्य व्यंग्य का कवि सम्मेलन का आयोजन गुजराती हाई स्कूल आर पी रोड सिकंदराबाद में सांस्कृतिक समिति के संयोजक श्री सुनील श्रीवास्तव, सहसंयोजक श्री परमानंद शर्मा एवं केंद्रीय समिति के अध्यक्ष श्री बिश्वजीत सिंह, उपाध्यक्ष श्री एस ए खान, महासचिव श्री प्रकाश चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील श्रीवास्तव एवं सभी विभागीय संयोजकों के नेतृत्व में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विनय कुमार सिंह आईपीएस द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया इसके बाद देश भर के उच्चस्तरीय कविगणों ने भाग लिया जिनमें श्री घनश्याम अग्रवाल, श्री वेणुगोपाल भट्टड़, श्री नरेंद्र राय, श्री अजीत गुप्ता, श्रीमती ज्योति नारायण, श्री अजय श्रीवास्तव, श्रीमती सीमा त्रिवेदी, श्रीमती संतोष संप्रति, श्रीमती कृष्णा पुरोहित ने अपनी अपनी प्रस्तुति दी ।

कवि ने अपनी हास्य और व्यंग्य से भरपूर कविताओं के माध्यम से उपस्थित लोगों को खूब हँसाया। उनकी कविताओं में समाज की छोटी-छोटी बातों को बड़े ही रोचक और मनोरंजक अंदाज में प्रस्तुत किया गया, जिसे सुनकर श्रोता बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से उनका उत्साह बढ़ाते रहे। कार्यक्रम के दौरान कवि ने अपनी अनोखी शैली और हाजिरजवाबी से ऐसा समां बांधा कि पूरा वातावरण हंसी और खुशी से गूंज उठा।

इस अवसर पर जन सेवा संघ के अध्यक्ष श्री बिश्वजीत सिंह, उपाध्यक्ष श्री एस ए खान, महासचिव श्री प्रकाश चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील श्रीवास्तव, सांस्कृतिक समिति के संयोजक श्री सुनील श्रीवास्तव, श्री परमानंद शर्मा, श्री राजीव चौबे, श्री पी पी पांडेय, श्री श्रीकांत पांडेय, श्री वी डी चौबे, श्री डी डी तिवारी, श्री मदन लाल रावल, श्री बिनीत सिंह, श्री आर पी सिंह, श्री सीताराम ठाकुर, श्री कपिराज सिंह, श्री अरूण सिंह राजपुरोहित, श्री एल एन चौबे, श्री राजेश शर्मा, श्री राजेश चौबे, नारायण ओझा, विंध्याचल तिवारी, राजेंदर सिंह, संतोष पांडेय, भोला सिंह, शेखर झा, दिनेश रजक, बिनीत सिंह, आर के सिंह, रामधयन सिंह, भरत व्यास, मोहम्मद मुनव्वर, बी के मिश्रा, नवीन सिंह, अशोक ठाकुर, नंद किशोर चौधरी, आलोक कुमार झा, हरेंदर चौबे, संजय सिंह पटनचेरु आदि की उपस्थिति हुए ।

पुष्टि मार्गीय सम्प्रदाय की बहुमूल्य निधि हैं कांकरोली नरेश डॉ. वागीश कुमार महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। विश्वविख्यात द्वारकाधीश मन्दिर में श्रीराजाधिराज मंदिर एवं षष्ठीपूर्ति महोत्सव कमेटी, मथुरा के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे अनंत विभूषित जगद्गुर श्रीमद् वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत तृतीय पीठाधीश्वर परम पूज्य गोस्वामी 108 डॉक्टर वागीश कुमार महाराज की षष्ठीपूर्ति (60वां अवतरण दिवस) के उपलक्ष्य में त्रि-दिवसीय महामनोरथ समारोह के अंतर्गत दूसरे दिन डेम्पियर नगर स्थित पाञ्चजन्य प्रेक्षागृह में वृहद अभिवादन समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ।जिसमें देश के कई प्रख्यात संतों, विद्वानों, धर्माचार्यों, प्रशासनिक अधिकारियों, राजनेताओं व समासेवियों ने पूज्य महाराजश्री का सम्मान कर उन्हें बधाइयां दीं।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के माननीय न्यायमूर्ति एवं हाई पावर कमेटी, बांके बिहारी मन्दिर, वृन्दावन के अध्यक्ष अशोक कुमार गुप्ता एवं माननीय न्यायमूर्ति राहुल चतुर्वेदी (उच्च न्यायालय, इलाहाबाद) ने कहा कि जगद्गुर श्रीमद् वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत तृतीय पीठाधीश्वर गोस्वामी डॉ. वागीश कुमार महाराज के द्वारा समूचे देश में मथुरा के ठाकुर द्वारकाधीश मंदिर के अलावा लगभग 175 मंदिरों के संचालन की पूरी व्यवस्था की जाती है।

श्रीमद्विष्णुस्वामी जगद्गुरू स्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (वल्लभगढ़ वाले) एवं प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि कांकरोली नरेश डॉ. वागीश कुमार महाराज पुष्टि मार्गीय सम्प्रदाय की बहुमूल्य निधि हैं।वे बहुभाषी होने के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत के भी महारथी हैं।

चिंतामणि कुंज के अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानंद गिरि महाराज एवं डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि पुष्टि मार्गीय सम्प्रादायाचार्य डॉ. वागीश कुमार महाराज सहजता,सरलता व उदारता के मूर्तिमान स्वरूप हैं।वे समूचे विश्व में श्रीकृष्ण भक्ति का प्रचार-प्रसार कर असंख्य व्यक्तियों को भक्ति के मार्ग से जोड़कर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कांकरोली नरेश, तृतीय पीठाधीश्वर परम पूज्य गोस्वामी 108 डॉक्टर वागीश कुमार महाराज ने कहा कि ब्रजभूमि अत्यंत पावन व पुनीत है।ये वही दिव्य भूमि है,जिस पर परमाराध्य भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी अनेकों लीलाएं की।यहां केवल वही आ पाते हैं, जो भगवान श्रीकृष्ण के प्रिय हैं।

महोत्सव में मुख्य रूप से आगरा के विश्व विख्यात मनकामेश्वर मंदिर के महंत योगेश पुरी महाराज, श्रीहित बड़ा रासमण्डल के श्रीमहंत लाडली शरण देवाचार्य महाराज, आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर स्वामी मारुति नंदनाचार्य महाराज (वागीश जी), प्रख्यात भजन गायक बनवारी महाराज, भागवत विदुषी कीर्ति किशोरी, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सतेन्द्र जोशी, भागवताचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी, डॉ. अशोक शास्त्री, अशोक रामायणी, प्रख्यात समाजसेविका ₹पंजाब रत्न₹ श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना), डॉ. राधाकांत शर्मा, प्राचार्य डॉ. राजीव पाण्डेय, श्रीधराचार्य महाराज, आचार्य अंशुल पाराशर, द्वारकाधीश मन्दिर, मथुरा के अधिकारी अधिकारी वैद्य अशोक कुमार शर्मा, सहायक अधिकारी सत्यनारायण शर्मा, समाधानीश्री ब्रजेश चतुर्वेदी, समाधानीश्री राजुभाई चतुर्वेदी, शुभमभाई शाह, ध्रुवभाई शाह, मुकेश भाई परिख, प्रकाश भाई पटेल, मुकेश भाई मेहता आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन महोत्सव के संयोजक डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी एवं सह-संयोजक व मीडिया प्रभारी राकेश तिवारी, एडवोकेट ने किया।कार्यक्रम के अंतर्गत ₹ठाकुर श्री राजाधिराज मंदिर श्री द्वारिकाधीश मंदिर, मथुरा ₹ पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

सायं काल सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आयोजित हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

भारत में अस्पतालों में आग की बढ़ती घटनाएँ- अस्पताल सुरक्षा, फायर ऑडिट और प्रशासनिक जवाबदेही पारदर्शी निगरानीं को सर्वोच्च प्राथमिकता ज़रूरी- समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर ओडिशा के कटक स्थित श्रीराम चंद्र भांजा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में सोमवार 16 मार्च 2026 को अर्ली मॉर्निंग घटी भयावह आग की घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया। इस घटना ने एक बार फिर देश के अस्पतालों में सुरक्षा व्यवस्था, फायर ऑडिट और प्रशासनिक जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।अस्पताल उपचार का केंद्र या जोखिम का स्थल ?अस्पताल समाज के लिए जीवन रक्षक संस्थान माने जाते हैं।यहां आने वाला हर व्यक्ति यह उम्मीद करता है कि उसे सुरक्षित वातावरण में इलाज मिलेगा।लेकिन जब वही अस्पताल आग जैसी दुर्घटनाओं के कारण मौत का केंद्र बन जाएँ,तो यह पूरे स्वास्थ्य तंत्र के लिए गंभीर चिंता का विषय बन जाता है।भारत में पिछले एक दशक में अस्पतालों में आग लगने की घटनाएँ बार-बार सामने आई हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इन घटनाओं में सैकड़ों मरीजों की जान जा चुकी है।अधिकतर मामलों में जांच बैठती है, कुछ अधिकारियों को निलंबित किया जाता है,लेकिन अंतिम सजा बहुत कम मामलों में होती है।यही कारण है कि यह समस्या बार-बार दोहराई जाती है।अस्पतालों में आग की घटनाओं के बाद अक्सर जांच समितियां गठित की जाती हैं। कई बार अस्पताल प्रबंधन और अधिकारियों को निलंबित भी किया जाता है।लेकिन अंतिम दोषसिद्धि और सजा बहुत कम मामलों में होती है।उदाहरण के लिए एएमआरआई अस्पताल मामले में निदेशकों को गिरफ्तार किया गया और उन पर भारतीय दंड संहिता की धारा 304 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया, लेकिन लंबे समय बाद कई आरोपियों को जमानत मिल गई। अस्पताल आग दुर्घटनाओं में दोषसिद्धि कम होने का एक बड़ा कारण कानूनी प्रक्रिया की जटिलता भी है।अक्सर यह साबित करना कठिन होता है कि दुर्घटना सीधे किसी व्यक्ति की लापरवाही के कारण हुई है। कई मामलों में अस्पताल प्रबंधन,ठेकेदार,बिजली विभाग और प्रशासनिक अधिकारियों की संयुक्त जिम्मेदारी होती है, जिससे जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है।इसके अलावा साक्ष्यों का अभाव भी बड़ी समस्या है।आग लगने के बाद कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और तकनीकी प्रमाण नष्ट हो जाते हैं। इससे जांच कमजोर पड़ जाती है।रात लगभग तीन बजे अस्पताल की पहली मंजिल पर स्थित ट्रॉमा केयर आईसीयू में अचानक आग लग गई। उस समय वहां करीब 23 मरीज भर्ती थे। आग इतनी तेजी से फैली कि देखते ही देखते अस्पताल में अफरा-तफरी मच गई। अस्पताल प्रशासन और कर्मचारियों ने मरीजों को बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन तब तक कई मरीज गंभीर रूप से झुलस चुके थे। इस दुखद हादसे में 10 मरीजों की मौत हो गई, जिनमें से 7 मरीजों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि 3 मरीजों की मृत्यु इलाज के दौरान हुई। बचाव कार्य के दौरान अस्पताल के कम से कम 11 कर्मचारी भी झुलस गए।प्रारंभिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है, हालांकि वास्तविक कारण विस्तृत जांच के बाद ही स्पष्ट होगा।

साथियों बात अगर हम अस्पतालों में आग लगने के प्रमुख कारणों को समझने की करें तो, विश्लेषकों और अग्नि सुरक्षा विशेषज्ञों के अनुसार अस्पतालों में आग लगने के कई प्रमुख कारण होते हैं। इनमें सबसे बड़ा कारण शॉर्ट सर्किट और खराब विद्युत व्यवस्था है। कई अस्पतालों में पुरानी वायरिंग होती है,जो अत्यधिक विद्युत भार के कारण गर्म होकर आग पकड़ लेती है। इसके अलावा आईसीयू और अन्य वार्डों में उपयोग होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी अत्यधिक गर्मी उत्पन्न करते हैं।दूसरा बड़ा कारण ऑक्सीजन सिलेंडरों की अधिकता है। कोविड-19 महामारी के दौरान यह समस्या और स्पष्ट हुई। ऑक्सीजन अत्यधिक ज्वलनशील वातावरण बनाती है, जिससे छोटी सी चिंगारी भी बड़े विस्फोट का रूप ले सकती है।तीसरा कारण फायर एनओसी का अभाव या उसका नवीनीकरण न होना है। कई अस्पताल बिना उचित फायर सुरक्षा प्रमाणपत्र के ही संचालित होते रहते हैं। चौथा कारण आपातकालीन निकास मार्गों का अभाव है। कई अस्पतालों में निकास मार्ग या तो बंद रहते हैं या उनमें अवैध निर्माण कर दिया जाता है।इसके अलावा अवैध निर्माण, भवन की खराब डिजाइन, फायर अलार्म और स्प्रिंकलर सिस्टम का अभाव तथा कर्मचारियों को फायर सुरक्षा का प्रशिक्षण न होना भी बढ़ी महत्वपूर्ण सटीक समस्या है।

साथियों बात कर हम सबसे अधिक खतरा आईसीयू और नवजात वार्ड में क्यों? इसको समझने की करें तो अस्पतालों में होने वाली अधिकांश मौतें आईसीयू और नवजात शिशु वार्ड में होती हैं। इसके कई कारण हैं। आईसीयू में भर्ती मरीज अक्सर गंभीर स्थिति में होते हैं और स्वयं चलने-फिरने में सक्षम नहीं होते। इसलिए आग लगने की स्थिति में उन्हें तुरंत बाहर निकालना कठिन हो जाता है।दूसरा कारण यह है कि आईसीयू में ऑक्सीजन सिलेंडरों की संख्या अधिक होती है।तीसरा कारण यह है कि वहां कई प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लगातार चलते रहते हैं, जिससे शॉर्ट सर्किट की संभावना बढ़ जाती है। चौथा कारण यह है कि बंद कमरों में धुआं बहुत तेजी से फैलता है, जिससे मरीजों का दम घुटने का खतरा बढ़ जाता है।

साथियों बात कर हम कागजों में फायर ऑडिट-जमीन पर लापरवाही को समझने की करें तो विशेषज्ञों के अनुसार अस्पतालों में आग की घटनाएं इसलिए भी नहीं रुक रही हैं क्योंकि फायर ऑडिट अक्सर केवल कागजों में ही सीमित रह जाते हैं। कई अस्पताल निरीक्षण से पहले ही अस्थायी व्यवस्था कर लेते हैं और निरीक्षण के बाद फिर लापरवाही शुरू हो जाती है। कई राज्यों में फायर विभाग के पास निरीक्षण के लिए पर्याप्त कर्मचारी भी नहीं होते।इसके अलावा अस्पतालों में सुरक्षा उपकरण तो लगाए जाते हैं, लेकिन उनका नियमित रखरखाव नहीं होता। फायर अलार्म सिस्टम काम नहीं करते, स्प्रिंकलर जाम हो जाते हैं और अग्निशमन यंत्रों की समय-समय पर जांच नहीं होती।

साथियों बात अगर हम आरोपियों को सजा नहीं होने व शीघ्र जमानत पर छूटने को समझने की करें तो यही वह बिंदु है जहां भारत की प्रशासनिक व्यवस्था की कमजोरी सामने आती है। जब जवाबदेही तय नहीं होती,तो लापरवाही दोहराई जाती है।भंडारा महाराष्ट्र अस्पताल आग मामले में डॉक्टरों और कर्मचारियों को निलंबित किया गया और तकनीकी कर्मचारियों पर केस दर्ज किया गया। विरार अस्पताल आग मामले में अस्पताल मालिक के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई और प्रशासनिक जांच बैठाई गई। दिल्ली के नवजात अस्पताल मामले में अवैध लाइसेंस के कारण अस्पताल संचालक को गिरफ्तार किया गया।अहमदाबाद के श्रेय अस्पताल में आग लगने के बाद अस्पताल को सील कर दिया गया और प्रबंधन पर केस दर्ज किया गया। लेकिन इन अधिकांश मामलों में अंतिम सजा या दोषसिद्धि बहुत कम हुई।

साथियों बात अगर हम भारत का सबसे बड़ा अस्पताल अग्निकांड- एक भयावह स्मृति को समझने की करें तो भारत के इतिहास में सबसे बड़ा अस्पताल अग्निकांड वर्ष 2011 में कोलकाता के एएमआरआई अस्पताल में हुआ था। इस दुर्घटना में 89 से 93 लोगों की मौत हो गई थी। अधिकांश मरीजों की मृत्यु धुएं से दम घुटने के कारण हुई थी। जांच में पता चला कि अस्पताल के बेसमेंट में ज्वलनशील सामान का अवैध भंडारण किया गया था, जिससे आग तेजी से फैल गई।

भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल साहब के जन्मदिवस पर 750 स्वच्छता प्रहरियों को वस्त्र वितरण

सूरत। भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल साहब के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में फेडरेशन ऑफ सूरत ट्रेड एंड टेक्सटाइल एसोसिएशन द्वारा शनिवार, 14 मार्च 2026 को शाम 5:30 बजे मिलेनियम मार्केट-1 परिसर में सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान 750 स्वच्छता प्रहरी भाई-बहनों को वस्त्र वितरित किए गए। इस अवसर पर केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल साहब, लिंबायत विधायक संगीता बेन पाटिल, भाजपा सूरत शहर अध्यक्ष परेश भाई पटेल, महामंत्री किशोर भाई बिंदल तथा पार्षद दिनेश भाई राजपुरोहित विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में फेडरेशन ऑफ सूरत ट्रेड टेक्सटाइल एसोसिएशन के अध्यक्ष कैलाश हाकीम, उपाध्यक्ष रामलाल सीरवी व सुरेश मोदी, तथा डायरेक्टर मोहनसिंह राजपुरोहित, पुरुषोत्तम अग्रवाल, शैलेश शाह सहित अनेक गणमान्य व्यापारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

कोल्हान रक्षा संघ ने पांचवीं अनुसूची एवं कम मजदूरी पर पर उद्योग, आउटसोर्सिंग को लताड़ा

करईकेला बैठक : सिंहभूम मे मजदुरों का शोषण रोकने ,संवैधानिक अधिकार पर फोकस

रांची , कभी सरायकेला स्टेट का हिस्सा रहा संप्रति पश्चिमी सिंहभूम जिला अन्तर्गत करायकेला में कोल्हान रक्षा संघ का एक बैठक अध्यक्ष डिबार जोंकों की अध्यक्षा में हुई । तीनों सिंहभूम की मूल समस्या पांचवीं अनुसूची की अवहेलना एवं आउट सोर्सिंग व ठेकेदार तथा उद्योगपति मजदुरों को कम मजदूरी दने की मसले पर मुद्दा रहा । जहां अध्यक्ष ने इसकी तीव्र आलोचना कर चेतावनी दी ।

उक्त बैठक में सर्व प्रथम सामाजिक , आर्थिक आदिवासियों के सुशासन व्यवस्था पर विस्तर से चर्चा की गयी । उन्होंने कहा कि कोल्हान रक्षा संघ एक सामाजिक समर्पित संस्था है ।जो मानकी मुंडा, एवं देऊरी समाज के परंपराओं को लेकर जागरूक करने एवं उनका हक के लिए आवाज बुलंद करने का काम करता है ।

भारतीय संविधान में वर्णित पांचवीं अनुसूची के तहत पारंपरिक शासन व्यवस्था को बनाए रखना हर आदिवासी एवं मूलवासी की जिम्मेदारी है ।

मजदुरो के संदर्भ में पुर्व ब्यूरोक्रेट् डिबार जोंकों ने साफ लफ्जों में कहा ठेकेदार और तीनों जिलों में कार्यरत आउट सोर्सिंग एजेंसियां मजदुरों को कम वेतन देना बंद करें , न्याय करें । श्रम विभाग की हर गतिविधि कोल्हान रक्षा संघ को पता है । जमीन हमारी , श्रमिक हमारे संविधान में समान काम के लिए समान वेतन का अधिकार तो आउट सोर्सिंग कर क्या रहे हैं । कोल्हान के लोगों को क्यों आजतक उनके अधिकारों न वंचित रखा गया है ?

भूईयां समाज से परेश नायक , नुना राम मांझी , रविंद्र मंडल , बानरा नरेश, साधुचरण बोदरा , समेत भारी संख्या मे लोग उपस्थित थे ।

मधुसूदन दास विचार मंच द्वारा झारखंड के ओड़िया हित में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये

ओडिशा के बाहर ओडिया इलाके मे इतिहास ,भाषा –संस्कृति, रोजी रोजगार उत्थान पर जोर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर , पूर्वी सिंहभूम जिला के हाता स्थित इंपीरियल रिसोर्ट के पर उत्कल गौरव मधुसूदन विचार मंच की तरफ एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया । जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार सह जानकार कार्तिक कुमार परिच्छा ने करते हुए सरायकेला खरसावां के ऐतिहासिक , सामाजिक , राजनीतिक व आर्थिक उत्थान निमित्त अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव मूल निवासियों के निमित्त पारित किये गये ।

ओड़िया समाज के बुद्धिजीवियों एवं प्रबुद्धजनों ने इसमें शिरकत करें हुए अपने अपने विचार को रखा ।जिन प्रस्ताव को पारित किये गये जिसमें प्रत्येक ओड़िया परिवार एवं गांव गांव स्थित विद्यालयों में उत्कल गौरव मधुसुदन दास का एक चित्र प्रदान की जायेगी ।मधुसूदन दास के जीवन में ओडिशा से बाहर रह गये तमाम ओड़िया इलाके को लेकर उसका तथ्य को संगृहीत करने का महत्वपूर्णनिर्णय लिया गया । विछिन्न उत्कल में जो इलाका उससे बाहर 1936 के बाद रह गया वहां रह रहे लोगो की मौजूदा सामाजिक , राजनैतिक , आर्थिक स्थिति का अध्ययन कर तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार की जायेगी ।कारण मधूसुदन दास ओड़िया जनमानस के सामाजिक एवं आर्थिक दशा उत्थान हेतु महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल किये थे । उसे तथ्यात्मक रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जायेगा । राजकीय समय में तत्कालीन अखाड़े तथा उसका सांकेतिक अखाड़ों से उत्पन्न छऊ की उद्गम स्थल उससे जूडे परिवार, भैरव भैरवी स्थलों कौन को चिन्हित कर उसकी मर्यादा को यथावत बनाए रखने हेतु उपाय किये जाने का निर्णय लिया गया । सिंहभूम के तीनों जिले में सभी प्रखंड ,पंचायतों में मधूसुदन दास संगठन खड़ा किया जायेगा । जहां बुद्धजीवी, व्यवसायिक, कृषि इन तीनों सेल को सुदृढ़ किया जायेगा ।इसके साथ अगले 1 अप्रेल एवं 28 अप्रैल को मधुसूदन जयंती समारोह आयोजित की जायेगी ।सब बैठक में मंच के अध्यक्ष प्रदीप सिंहदेव, सचिव पंचानन राउत ,संगठक सत्यनारायण मोहान्ती, विश्वामित्र खड़ायत , विनोद कुमार राउत, जगत किशोर सामल आदि सदस्य इसमें मौजूद थे।

खूंटी एसपी मनीश टप्पों ने छह पीएलएफआई उग्रवादियों को किया गिरफतार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , झारखंड की खूंटी पुलिस ने प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। तजना नदी के समीप एवं कालामाटी डूंगरी के पास शुक्रवार शाम छापेमारी कर छह उग्रवादियों को गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से हथियार, गोलियां और लेवी वसूली से जुड़े कई महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद किए गए हैं।

उग्रवादियों झारखंड की खूंटी पुलिस ने प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआई के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। तजना नदी के समीप एवं कालामाटी डूंगरी के पास शुक्रवार शाम छापेमारी कर छह उग्रवादियों को गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से हथियार, गोलियां और लेवी वसूली से जुड़े कई महत्वपूर्ण दस्तावेज मिले हैं

एसपी मनीष टोप्पो ने शनिवार को बताया कि खूंटी में सक्रिय उग्रवादियों के नेटवर्क की गुप्त सूचना मिली, जिसके आधार पर कार्रवाई की गई। तजना नदी के समीप कुछ संदिग्ध लोगों के जमा होने की सूचना शुक्रवार की शाम को मिलने के बाद पुलिस की विशेष टीम बनाई गई। इसके बाद एसडीपीओ वरुण रजक के नेतृत्व में टीम ने तजना नदी के पास नहर किनारे छापेमारी कर तीन लोगों को गिरफ्तार किया। इनमें मुरहू के माहिल निवासी विजय भोक्ता, खूंटी के बेलाहाथी रोड निवासी धीरज कुमार और अभिषेक कुमार उर्फ अभिषेक राम शामिल हैं।

पूछताछ में उनकी पहचान उजागर होने के बाद पुलिस ने उनकी निशानदेही पर कालामाटी डूंगरी के पास छापेमारी की तो एसयूवी में सवार तीन अन्य उग्रवादियों को गिरफ्तार किया गया। इनमें कुम्हार टोली निवासी शुभम कुमार पोद्दार, गिरजा टोली दादुल घाट निवासी निमिष गोप उर्फ हनी तथा रांची के हिनू पोखरटोली मिलन चौक निवासी राम अयोध्या शर्मा उर्फ राजा शर्मा शामिल हैं। पुलिस संगठन के नेटवर्क में शामिल अन्य उग्रवादियों की तलाश में जुटी है।

तलाशी के दौरान पुलिस ने आरोपियों के पास से एक देसी पिस्टल, दो मैगजीन और 22 राउंड गोली बरामद की। इसके अलावा विभिन्न नामों से खरीदे गए मोबाइल फोन की रसीदें, पीएलएफआई संगठन के पर्चे और लेवी वसूली का हिसाब लिखी नोटबुक भी बरामद हुई है। साथ ही पुलिस को व्यवसायियों और ठेकेदारों के नाम-पते एवं मोबाइल नंबर की सूची, बैंक पासबुक, चेकबुक, एटीएम कार्ड तथा जमीन खरीद-बिक्री से जुड़े कई दस्तावेज भी मिले हैं। एसपी ने बताया कि पूछताछ में आरोपियों ने व्यवसायियों और ठेकेदारों की जानकारी जुटाकर जेल में बंद पीएलएफआई सदस्यों को भेजने की बात स्वीकार की है।

प्रेस क्लब अमृतसर के चुनावों को लेकर 17 मार्च को पत्रकारों के साथ बैठक

चुनाव नियमों और पत्रकारों की मतदाता सूची तैयार करने पर होगा विचार

अमृतसर, 16 मार्च (साहिल बेरी)

जिला अमृतसर की विभिन्न पत्रकार एसोसिएशनों/यूनियनों द्वारा प्रेस क्लब अमृतसर के चुनाव करवाने की मांग को लेकर डिप्टी कमिश्नर अमृतसर और जिला लोक संपर्क अधिकारी को मांग पत्र सौंपे गए थे। इन मांग पत्रों के आधार पर डिप्टी कमिश्नर अमृतसर दलविंदरजीत सिंह ने जिला लोक संपर्क अधिकारी अमृतसर को प्रेस क्लब अमृतसर के स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करवाने की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए हैं।

इस संबंध में जानकारी देते हुए जिला लोक संपर्क अधिकारी अमृतसर इंदरजीत सिंह ने बताया कि प्रेस क्लब के चुनाव करवाने से पहले चुनाव नियमों को तैयार करना और चुनाव में भाग लेने वाले पत्रकारों की मतदाता सूची तैयार करना अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने बताया कि चुनाव नियमों को तैयार करने तथा मतदाता सूची बनाने के संबंध में जिले के सभी पत्रकारों तथा विभिन्न पत्रकार, प्रेस फोटोग्राफर और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एसोसिएशनों/यूनियनों के प्रतिनिधियों के साथ 17 मार्च 2026 को दोपहर 01:00 बजे प्रेस क्लब अमृतसर में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की जाएगी।

जिला लोक संपर्क अधिकारी इंदरजीत सिंह ने जिले के सभी पत्रकारों और विभिन्न पत्रकार संगठनों/यूनियनों के प्रतिनिधियों से अपील की है कि वे निर्धारित समय पर इस बैठक में अवश्य पहुंचे, ताकि इस संबंध में विचार-विमर्श कर आगे की कार्रवाई शुरू की जा सके।

मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत कार्ड बनाने के लिए 17 मार्च से विशेष सेवा कैंप

अमृतसर, 16 मार्च (साहिल बेरी)

डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्री दलविंदरजीत सिंह ने जिला वासियों को सूचित किया है कि पंजाब सरकार द्वारा मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत कार्ड बनाने के लिए सातवें चरण के विशेष सेवा कैंप 17 मार्च 2026 से शुरू किए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि इस उद्देश्य के लिए जिला अमृतसर में कुल 57 विशेष कैंप लगाए जा रहे हैं। इन कैंपों का पूरा विवरण जिला प्रशासन की वेबसाइट www.amritsar.nic.in पर उपलब्ध है।

डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि किसी भी परिवार के कम से कम दो सदस्य अपने वोटर कार्ड और मोबाइल नंबर से लिंक आधार कार्ड के साथ नजदीकी सेवा कैंप या किसी भी सी.एस.सी. सेंटर पर जाकर यह कार्ड मुफ्त बनवा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि यदि किसी पारिवारिक सदस्य की उम्र 18 वर्ष से कम है, तो उसके लिए मोबाइल से लिंक आधार कार्ड और जन्म प्रमाण पत्र साथ लाना अनिवार्य है। कार्ड बनवाने के समय दो परिवारिक सदस्यों की एक साथ मौजूदगी आवश्यक है।

डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के तहत पंजाब सरकार द्वारा हर परिवार को सालाना 10 लाख रुपये तक मुफ्त इलाज की सुविधा प्रदान की जाएगी।

उन्होंने जिला वासियों से अपील की कि वे ज्यादा से ज्यादा संख्या में इन कैंपों का लाभ उठाएं और मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना के कार्ड जरूर बनवाएं।

1.5 लाख करोड़ रुपये के निवेश से पंजाब निवेशकों की पहली पसंद बना: बंदेशा

अमृतसर, 16 मार्च (साहिल बेरी)

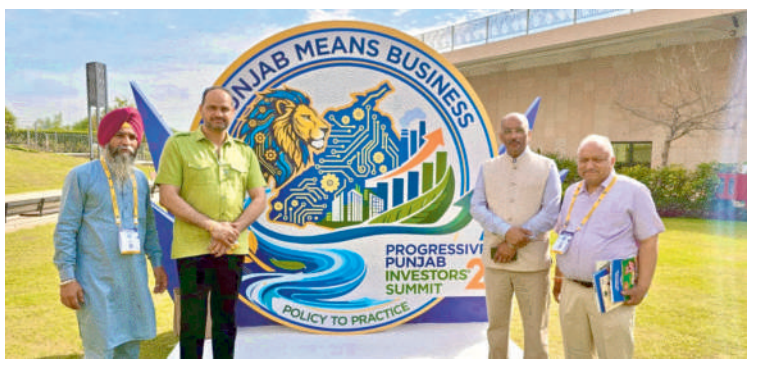

पंजाब लघु उद्योग निगम के वाइस चेयरमैन और आम आदमी पार्टी के अमृतसर लोकसभा इंचार्ज जसकरन सिंह बंदेशा ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व में पंजाब औद्योगिक विकास के नए दौर में प्रवेश कर चुका है और अब देश-विदेश के निवेशकों की पहली पसंद बनता जा रहा है।

उन्होंने कहा कि मोहाली में आयोजित प्रोग्रेसिव पंजाब निवेशक सम्मेलन 2026 के दौरान बड़े औद्योगिक घरानों ने बड़े स्तर पर निवेश की घोषणा की है, जिससे पंजाब में उद्योग और रोजगार को बड़ा बढ़ावा मिलेगा।

चेयरमैन बंदेशा ने बताया कि सम्मेलन के पहले ही दिन विभिन्न औद्योगिक घरानों द्वारा 10,000 करोड़ रुपये से अधिक निवेश की घोषणाएं की गईं। विश्व प्रसिद्ध उद्योगपति लक्ष्मी निवास मित्तल ने बठिंडा स्थित गुरु गोबिंद सिंह रिफाइनरी के विस्तार के लिए लगभग 2,600 करोड़ रुपये निवेश करने का ऐलान किया। इसी तरह टाटा स्टील ने लुधियाना के पास स्टील प्लांट स्थापित करने के लिए हजारों करोड़ रुपये निवेश करने का भरोसा दिया है, जिससे हजारों नई नौकरियां पैदा होंगी।

इसके अलावा सज्जन जिंदल के नेतृत्व वाले जेएसडब्ल्यू ग्रुप ने राजपुरा में अपनी औद्योगिक इकाई को आधुनिक बनाने के लिए बड़े स्तर पर निवेश करने की घोषणा की है। पंजाब के अपने औद्योगिक समूह जैसे ट्राइडेंट, हीरो साइकिल, सोनालिका, प्रीत ट्रैक्टर, मोंटी कार्लो और वर्धमान ग्रुप ने भी टेक्सटाइल, ट्रैक्टर और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में विस्तार की योजनाओं की घोषणा की है।

चेयरमैन बंदेशा ने कहा कि पंजाब में औद्योगिक विकास को और मजबूत करने के लिए कई अन्य कंपनियां भी निवेश कर रही हैं। सनातन पॉलीकोट 1,600 करोड़ रुपये, अंबुजा सीमेंट 1,400 करोड़ रुपये, रुचिरा पेपर्स 1,137 करोड़ रुपये और हैप्पी फोर्जिंग्स 1,000 करोड़ रुपये का निवेश करेंगी, जिससे पंजाब के औद्योगिक क्षेत्र को और मजबूती मिलेगी।

उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी बड़े निवेश हो रहे हैं। फोर्टिस मोहाली में 900 करोड़ रुपये के विस्तार के साथ लगभग 4,700 नई नौकरियां पैदा करेगा, जबकि इन्फोसिस भी मोहाली में निवेश कर हजारों युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेगा।

बंदेशा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय कंपनियां भी पंजाब में निवेश के लिए आगे आ रही हैं। जापान की टॉपन और नीदरलैंड की डी ह्यूस जैसी कंपनियां भी पंजाब में बड़े स्तर पर निवेश की योजना बना रही हैं।

उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार की नई औद्योगिक नीति और सिंगल-विंडो प्रणाली के कारण निवेशकों को सभी मंजूरियां तेजी से मिल रही हैं। अरविंद केजरीवाल ने भी उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए स्पष्ट नीतियां और 45 दिनों के भीतर मंजूरी देने की प्रणाली पर जोर दिया है।

बंदेशा ने कहा कि लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये के संभावित निवेश से पंजाब में उद्योग, रोजगार और आर्थिक विकास को नई दिशा मिलेगी और राज्य देश के औद्योगिक नक्शे पर और मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि मान सरकार की उद्योग-अनुकूल नीतियों के कारण पंजाब अब देश-विदेश के निवेशकों के लिए भरोसेमंद गंतव्य बनता जा रहा है।

कटक SCB में भयानक आग,10 मरीज़ों मृत्यु

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कटक SCB हॉस्पिटल में भयानक आग लग गई । आग की वजह से लोगों को बहुत ज़्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है । बताया गया है कि आग में 15 लोगों की मौत हो गई है। 10 मृतकों के परिवारों के लिए 25 लाख रुपये की मदद का ऐलान किया गया है। पता चला है कि SCB के ट्रॉमा केयर हॉस्पिटल में ऐसी आग लगी थी ।कुल 23 मरीज़ ICU में थे। शुरुआत में 7 लोगों की मौत की खबर आई थी। बाद में मरने वालों की संख्या बढ़ती गई। हालात का रिव्यू करने के बाद मुख्यमंत्री का जवाब भी सामने आया है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने सभी मृतकों के परिवारों को 25 लाख रुपये का मुआवजा देने का ऐलान किया है।

अब मृतक मरीज़ों की पहचान सामने आ गई है.... मृतकों की पहचान रमेश चंद्र परिदा, दर्शु मुंडा, MD न्यूम, गौरांग चंद्र बारिक, शेख अब्दुल सत्तार, मधुसूदन दलाई, कृष्ण चंद्र विशाल, रवींद्रदाश, चेरू परिदा और मेनका राउत के तौर पर हुई है।

खबर है कि जिन लोगों ने मरीज़ों को लाने में मदद की, उनका भी इलाज किया जा रहा है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने यह भी सख्त निर्देश दिए हैं कि आग कैसे और क्यों लगी, इसकी पूरी जांच की जाएगी। मुख्यमंत्री ने भरोसा जताया है कि दोषी पाए जाने वालों को सही सज़ा दी जाएगी। सभी मरीज़ों को दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया गया है। पता चला है कि फायर ब्रिगेड घटना की जांच करेगी। पता चला है कि मेडिकल कॉलेज में फायर ब्रिगेड का सीधा हाथ है। पता चला है कि ट्रॉमा केयर में बिजली के शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी थी। अगर कोई कर्मचारी दोषी पाया जाता है, तो जांच के बाद उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने पिछली सरकार पर भी निशाना साधा और कहा कि आज ऐसे दिन इसलिए देखने को मिल रहे हैं क्योंकि पिछली सरकार ने अस्पताल के लिए कोई फायदेमंद कदम नहीं उठाए थे। इस आग के बाद मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने बताया है कि राज्य के सभी मेडिकल कॉलेजों को मॉडर्न इक्विपमेंट दिए गए हैं।

श्री गोडवाड सीरवी क्षत्रिय समाज ट्रस्ट बिबवेवाड़ी संस्था की नई कार्यकारिणी गठित

परिवहन विशेष न्यूज

पुणे: श्री गोड़वाड़ सिरवी क्षत्रिय समाज बिबवेवाडी सस्था की रविवार को आईमाताजी मन्दिर बिबवेवाडी वडेर के आईजी सभागृह में जनरल मीटिंग का आयोजन किया गया। समाज के सभी गणमान्यों की उपस्थिति व सर्वसम्मति से नये कार्यकारणी का गठन किया गया। सर्वसहमति से जगाराम सिन्दरा को अध्यक्ष तथा लच्छाराम वरपा को सचिव चुना गया। इसके अलावा अन्य पदाधिकारियों में लच्छाराम काग को उपाध्यक्ष तथा हरिराम गेहलोत को सहसचिव तथा नेनाराम काग को कोषाध्यक्ष, व कानाराम लसेटा को सहकोषाध्यक्ष चुना गया। इसके अलावा मीडिया प्रभारी सीए. अशोक आगलेचा, सहलाकार मुलाराम काग, सहलाकार छतराराम काग एवं कार्यकारिणी समिति में खरताराम होम्बर, मोडाराम काग, नथाराम काग, जीवाराम सोयल, खुमाराम राठौड़, कानाराम वरपा, गणेशराम सोलंकी, घिसाराम गेहलोत, कानाराम होम्बर, बाबूलाल पंवार को चुना गया। नई कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों को शपथ दिलाई गई और समाज की ओर से सम्मान किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष हिरालाल कलाजी राठौड ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी।

नये अध्यक्ष जगाराम सिन्दरा ने कहा कि समाज के सदस्यों ने हम लोगों को जो जिम्मेदारी सौंपी है उसका निर्वाहन पूरी निष्ठा समर्पण से करेगें। इस अवसर पर सीरवी महासभा महाराष्ट्र प्रान्त के महासचिव रामलाल काग, सीरवी शिक्षण संस्थान उदयपुर के अध्यक्ष खिवराज परमार, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता सिन्दरा सहित समाज के अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। ये जानकारी जीवाराम सेपटा द्वारा दी गई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023